R. K. Advertising
के माध्यम से 'जैन गजट' में
विज्ञापन बुक कराने हेतु
सम्पर्क करें-
शेखर चन्द पाटनी
राष्ट्रीय संवाददाता-जैन गजट
मो. 9667168267
रोहित कुमार पाटनी, डायरेक्टर
(आर. के. एडवरटाइजिंग)
मो. 8003892803
ईमेल
rkpatni77@gmail.com

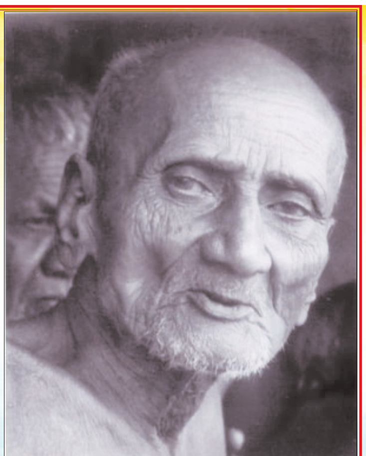

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

पहले बच्चे मां-बाप का मुंह ताकते थे, अब मां-बाप बच्चों का मुंह ताकते हैं पृष्ठ 09 पर

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 38 कुल पृष्ठ 16 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 13 जुलाई 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

आचार्य श्री शान्ति सागर जी महाराज छियालिसा

(रचयिता-परम पूज्य मुनि श्री उत्तम सागर जी महाराज सुशिष्य परम पूज्य आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज)

कर्नाटक के भोज ग्राम में। जिनवर जैसे गुरूवर जन्मे।।1।। सत्यवती गुरूवर की माता। पिता भीमगोड़ा चउ भ्राता।। 3।।
गुरूवर भये बचपन से वैरागी। घर में रहते भी गृहत्यागी।।5।। 'उत्तुर' नगरी में दीक्षा ली। ऐलक पद्वी गिरनारी ली।। 7।।
श्रावक आगम विधि अनजाने। मुनि अहार चर्या नहीं जाने।।9।। बिन विधि मिले किये उपवासा। आगम का फिर किया खुलासा ।। 11।।
लख दृढ़ता सकल सृष्टि ने। दीक्षा-गुरू देवेन्द्र कीर्ति ने।।13।। गुरूणाम् गुरू तभी कहाये। युग के आद्याचार्य कहाये।। 15।।
किये करोड़ों जाप आपने। सहे घोर उपसर्ग आपने।।17।। जो कोई तुमसे लड़ने आया। तुम्हें देख पद शीश नवाया।। 19।।
मात्र आपके सुमिरन से ही। कष्ट नष्ट होते जड़ से ही।।21।। वचन सिद्ध तुमको था ऐसा। जो कह देते, होता वैसा।। 23।।
चढ़ी चीटियां सारे तन पर। तब भी नहीं हिले वे तिल भर।।25।। आत्म ध्यान लीन थे गुरू जब। बैठा सिंह पास में आ तब।। 27।।
क्रोधी छिद्र ले तलवारा। आया तुम पर करने वारा।।29।। इक पागल ने लाठी द्वारा। खूब रात भर इनको मारा।। 31।।
इनको लख कर यूं लगता था। क्षमाधर्म तन पर उतरा था।।33।। आगम-ग्रन्थ सुरक्षित कीने । जो हैं आतम- रस से भीने।। 35।।
भक्त भीषमा मुदित भाव से। धरा शीष पर इन्हें चाव से।।37।। अरु आगे भी जितने होंगे। निमित्त सभी के आप रहेंगे।। 39।।
तव चरणों में लिपटूं ऐसे। बेल लिपटती तरू से जैसे।।41।। शांति-सिंधु गुरू के गुण गाना। मानो रवि को दीप दिखाना।। 43।।
करके उपवासा छत्तीसा। कीना सल्लेखना विशेषा।।45।।

नाम सात गोड़ा मन भाया। अडिग मना, अति सुदृढ़ काया।।2।। गुरूवर भये बाल ब्रह्मचारी। संयम-त्याग तपोगुण धारी।। 4।।
दुर्लभ थे मुनिवर के दर्शन। नग्न दिगम्बर मुनि के दर्शन।।6।। श्रमण बने यरनाल गांव में। सूरि बने समडोली गांव में ।। 8।।
लेने जब अहार गुरू जावे। श्रावक नहीं पड़गाहन पाते।।10।। बड़ी अटपटी विधि लेते थे। भाग्य परीक्षा भी करते थे।। 12।।
स्वयं लई पुनि दीक्षा इनसे। भक्ति भाव से बड़ी विनय से।।14।। आधे से भी ज्यादा जीवन। घोर तप उपवासी बन।। 16।।
बैठ गये तो जप करते थे। खड़े हुये तो तप करते थे।।18।। कभी किसी को बिना मनाये। शिष्य एक से एक बनाये।। 20।।
तव-पद-गंधोदक के द्वारा। पूर्ण मिटा था कोढ़ विकारा।।22।। गूंगे से तुमने नवकारा। बुलवाया था शुद्धोच्चारा।। 24।।
लिपटा तन पर कंठ-हार बन। सर्प न डिगा सका उनका मन।।26।। किंतु अभय उनका तन-मन सब।
नहीं पता, वह चला गया कब।। 28।।
उसे पुलिस ने बंदी बनाया। किन्तु आपने उसे छुड़ाया।। 30।। तब भी अटल ध्यान में गुरुवर। शांति सिंधु रहे करुणाकर।।32।।
ताड़पत्र से ताम्र पत्र पर। जिनवाणी अंकित सुखकर।। 34।। अन्न-त्याग-व्रत रखकर इनने। रखे जिनालय पावन इनने।।36।।
इस सदी के आचार्य साधु सब। क्षुल्लकादि, आर्यिका व्रती सब।।38।। युगों-युगों तक साधु संघ ये। चुका न सकते इनके ऋण ये।।40।।
मैं बालक मूरख अज्ञानी। आत्म ज्ञान के तुम हो दानी।।42।। अंत समय जब तुमने जाना। जैन जगत उद्बोधित कीना।।44।।
कुंथल गिरि से स्वर्ग सिधारे। उत्तम मुनि नित तुम्हें पुकारे।।46।।

सुगुरू छियालिसा पढ़े, या सुनले जो रोज। वही शांति सागर बने, करे निजातम खोज। ।।1।। संतों के सिरताज थे, शांतिसागराचार्य। बिन स्वार्थ के कर गये, जन-जन के हितकार्य ।।2।।

प्रेरणा

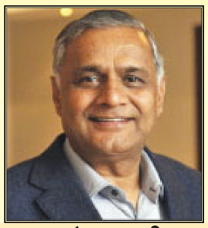

अशोक पाटनी
आर. के. मार्बल्स किशनगढ़

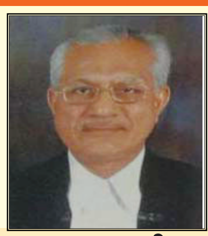

सुधान्शु कासलीवाल
जयपुर

जहां उपस्थित होते हैं वहां सब आपको प्यार करते हैं,
जहां से चले जाते हैं, सब आपको याद करते हैं।
जहां पहुंचने वाले होते हैं वहां सब आपका इन्तजार करते हैं।
शेखरचन्द पाटनी

पुण्यार्जक नमनकर्ता

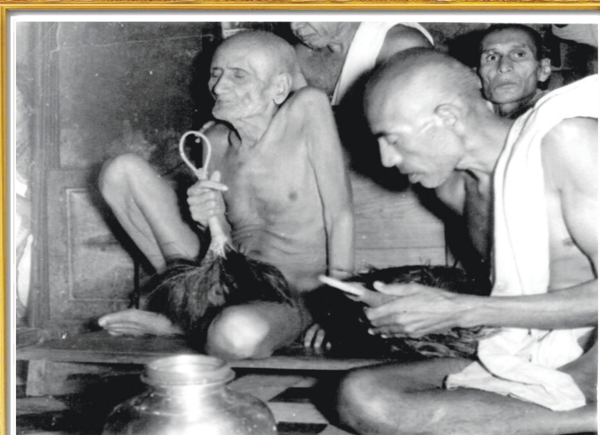

एम. के. जैन श्रीमती सरिता जैन (चेन्नई)

विवेक काला
प्रमुख रत्न व्यवसायी जयपुर

राजेन्द्र कटारिया
अहमदाबाद

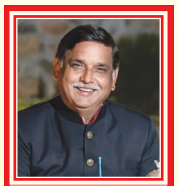

सुरेश सबलावत
जयपुर

प्रदीप चूड़ीवाल
जयपुर

महावीर बोहरा
आनंदपुर कालू

पवन मोदी
कोलकाता

विज्ञापन प्रेषकः R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच आफिस- जयपुर, इंदौर, सूरत, मुम्बई, कोलकाता, गुवाहाटी

20वीं सदी के प्रथमाचार्य, परमपूज्य चारित्र चक्रवर्ती, प्रातःस्मरणीय

108 श्री शान्ति सागर जी महाराज (दक्षिण) के 154 वें जन्म वर्ष वर्धन*

आषाढ़ कृष्ण छठ, दिनांक 6 जुलाई पर कोटिशः नमोस्तु

36 मूलगुणधारी आचार्य श्री का संक्षिप्त गुणानुवाद

1 **जन्म** आषाढ़ कृ.6 वि.सं. 1929 ईस्वी 1872, बुधवार।

2 **जन्म** स्थान येलगुल भोज (कर्नाटक),

3 **लौकिक नाम** श्री सातगौड़ा पाटील (जैन)। अप्पा

4 **माता पिता** श्रीमती सत्यवती - भीमगौड़ा पाटील।

5 **भाई बहन** श्री आदिगोडा(मुनि श्री वर्धमान सागर) श्री देवगोडा,श्री सात गोडा,श्री कुभगोडा, बहन श्रीमती कृष्णा

6 **दोहला स्वप्न** जब आप गर्भ में थे तब माता को सहस्त्रदल वाले 108 कमलों से जिनेंद्र प्रभु की पूजा करने की कामना हुई

7 **जन्मपत्रिका** में शुभ योग जन्म पत्रिका में शंख योग, पारीजात, राज, अधि, केदार, उत्तम समाधि, कलानिधि योग आदि थे।

8 **नदियाँ** जन्म भूमि भोज के पास वेद गंगा और दूध गंगा दो नदियां है

9 **ब्रह्मचर्य व्रत** 18 वर्ष की उम्र में आजीवन ब्रह्मचर्य व्रत

10 **कठोर बल** आप में शारीरिक बल बहुत रहा। दो बैलो की जगह स्वयं पानी खींचते थे

11 **त्याग’** 18 वर्ष की उम्र में बिस्तर तथा 25 वर्ष की उम में जूते चप्पल का त्याग

12 **देव दर्शन** प्रतिदिन देव दर्शन पूजन स्वाध्याय के बाद भोजन करते थे

13 **स्वाध्याय** बचपन में समयसार और आत्मानुशासन ग्रंथ का स्वाध्याय करते थे

14 **तीर्थ यात्रा** 32 वर्ष की उम्र में श्री सम्मेद शिखर जी ओर राजगृही की यात्रा की

15 **दो रस का त्याग** शिखर जी की यात्रा के बाद घी और तेल दो रस का आजीवन त्याग और एक समय भोजन नियम लिया

16 **करुणा भाव** सम्मेद शिखर पर्वत पर वृद्ध महिला को कंधे पर बिठाकर ओर राजगृही पर्वत की वृद्ध को कंधे पर बिठाकर यात्रा कराई

17 **क्षुल्लक दीक्षा** ज्येष्ठ शु. 13 वि.सं. 1972 ईस्वी 1915, उत्तूर ग्राम (महाराष्ट्र)।

18 **ऐलक दीक्षा** गिरनारजी सिद्धक्षेत्र पर, भगवान नेमिनाथ के चरणों में पाँचवी टोंक पर स्वयं ने प्रभु साक्षी में ली।

19 **मुनि दीक्षा** फाल्गुन शु. 14 वि.सं. 976, ईस्वी 1920 यरनाल ग्राम (कर्नाटक) में।

20 **दीक्षा गुरु** मुनिश्री देवेन्द्रकीर्तिजी महाराज ने क्षुल्लक और ऐलक दीक्षा दी।

21 आचार्य पद आश्विन शु. 11 वि. सं. 1981, ईस्वी 1924 समडोली ग्राम में

प्रथमाचार्य प.पू. चारित्र चक्रवर्ती

आचार्य श्री 108 शांतिसागर जी महाराज

प्रथम मुनि शिष्य श्री वीर सागर जी

सल्लेखना पूर्वक देहविलय

प्रथम मुनि शिष्य **श्री वीर सागर जी** को लिखित आदेश पत्र द्वारा आचार्य पद प्रदान कर, भाद्र शुक्ल 2, दिनांक 18 सितम्बर 1955 को प्रातः 6 बजकर 50 मिनट पर महाराष्ट्र प्रान्त के **कुन्थलगिरि सिद्धक्षेत्र** पर सल्लेखनापूर्वक आपका देहविलय हुआ।

22 **चारित्रचक्रवर्ती** वि.सं. 1994, ईस्वी 1937, गजपंथा सिद्धक्षेत्र पर

23 **मंगल विहार** उत्तर भारत में मंगल विहार तीर्थराज सम्मेद शिखरजी की वन्दनार्थ मार्गशीर्ष कृ. 1 वि.सं. 1984 ईस्वी सन् 1927 में।

24 **चातुर्मास** 41 चातुर्मास उत्तर भारत में 11 ओर 30 दक्षिण में वर्षायोग सम्पन्न किये।

25 **पदविहार** आपने संयमी जीवन में 35000 मील से अधिक पदविहार किया।

26 **तपसाधना** सिंहनिष्क्रीड़ित, चारित्रशुद्धि, आदि अनेक व्रतों को करते हुए जीवन में कुल 9938 उपवास, किये

27 **दीक्षित शिष्य** 26 मुनि, 5 आर्यिका, 16 ऐलक, 28 क्षुल्लक, 13 क्षुल्लिका और सैकड़ों व्रती श्रावकरूप चतुर्विध संघ।

28 **गुरूणां गुरु** सन् 1925 में गोम्मटेश्वर भगवान बाहुबली स्वामी के महामस्तकाभिषेकश् में सान्निध्य के बाद दीक्षा गुरु ने आप से दीक्षा ली इस कारण आप गुरूणां गुरुश् कहे जाने लगे।

29 **संरक्षण जिनालय,** जिनवाणी, संस्कृति संरक्षण जिनालय रक्षार्थ 3 वर्ष 12 दिन तक अन्न ग्रहण का त्याग कर धर्मरक्षा एवं संस्कृति की रक्षा की।

30 **जिनवाणी संरक्षण** ताड़पत्रों पर लिखित षट्खंडागम और महाबन्ध ग्रन्थों की कीटों से रक्षा हेतु उन ग्रन्थों को ताम्रपत्रों पर अंकित कराया।

31 **उपसर्ग** आप के संयमी जीवन में सर्प के उपसर्ग छह बार, सिंह मकोड़े , चींटी तथा मानव जन्य पागल व्यक्ति का उपसर्ग हुआ

32 **व्रत परिसंख्यान** आपने कठिन विधि ली जवाहरात की थाली, प्रसूता गाय बछड़े शीतकाल में गिले कपड़े से पड़गाहन, मिट्टी के कलश से पड़गाहन की विधि 8 दिन बाद पूर्ण हुई।

33 **मंत्र जाप** 18 करोड़ मंत्रों का जाप जीवन में 18 करोड मंत्रों का जाप किया

34 **भविष्य** का पूर्वानुमान राजाखेड़ा की घटना, ब्रह्मचारी जिनदास को घर भेजना, गांधी जी की हत्या, आदि अनेक घटनाओं का आभास

35 **‘अन्नआहार त्याग’** जैन मंदिरों में विजातीय प्रवेश के विरोध मे 1105 दिनों तक अन्न आहार नहीं किया

36 **बालविवाह पर रोक** महाराष्ट्र सरकार से बाल विवाह पर रोक का कानून बनवाया

विज्ञापन R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच आफिस- जयपुर, इंदौर, सूरत, मुम्बई, कोलकाता, गुवाहाटी

समाज से विनम्र निवेदन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा द्वारा की जा रही धार्मिक एवं सामाजिक कल्याण की योजनाओं में दान देकर सहयोग प्रदान कीजिये। संस्था को 12 I/80G (प्रमाण पत्र संख्या URN-AAHTS7154EF2025101) एवं CSR-1 (प्रमाण पत्र संख्या -SRN-N30616809) के तहत आयकर में छूट प्राप्त है।
संपर्क : मोबाइल/वाट्सअप - 9415008344, 9415108233, 7607921391, 7505102419

SHRI BHARATVARSHIYA DIGAMBER JAIN MAHASABHA

ACCOUNT NO. - 2405000100033312
RTGS/IFSC/NEFT Code - PUNB0185600 PUNJAB NATIONAL BANK, RAJENDRA NAGAR, Lucknow Pin Code - 226004 (U.P.)

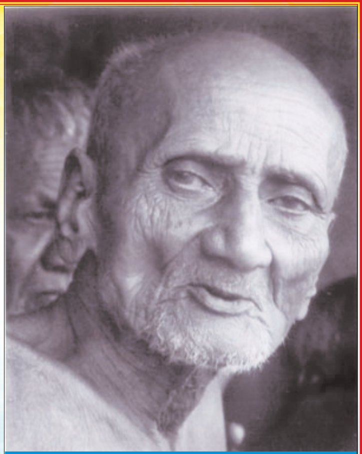

बीसवीं सदी के प्रथमाचार्य
चारित्र चक्रवर्ती
परम पूज्य आचार्य श्री शांति सागर जी

दिल्ली में बनेगा जैन समाज का ऐतिहासिक एवं विश्वस्तरीय भवन पृष्ठ 05 पर

1 दिसम्बर 1895 से प्रकाशित जैन समाज का सर्वाधिक प्रसार संख्या वाला साप्ताहिक

जैन गज़ट

www.Jaingazette.com

वर्ष 32 अंक 38 कुल पृष्ठ 16 लखनऊ, प्रकाशन तिथि- सोमवार 13 जुलाई 2026, वीर नि. संवत् 2552

Unit : Sri Bharatvarshiya Digamber Jain Mahasabha jaingazette2@gmail.com

15 से 18 जुलाई के बीच आचार्यश्री समय सागरजी के भोपाल पहुंचने की संभावना

पहली बार भोपाल में आचार्यश्री समयसागरजी का चातुर्मास, 22 मुनिश्री भी रहेंगे साथ

पार्किंग, सुरक्षा और यातायात के लिए समितियां सक्रिय ➡ 18 हजार वर्ग फीट का मुख्य डोम मेट्रो स्टेशन के नीचे तैयार होगा। ➡ 4 हजार वर्ग फीट का नियमित प्रवचन पंडाल। ➡ 5 हजार वर्ग फीट का ध्यान एवं भक्ति केंद्र। ➡ 5 से 6 हजार वर्ग फीट की भोजनशाला। ➡ 1200 वर्ग फीट की त्यागी - व्रती भोजनशाला

भोपाल। दिगंबर जैन परंपरा में आचार्य पद पर प्रतिष्ठित आचार्य श्री 108 समयसागर महाराज ससंघ संभावित भोपाल चातुर्मास को लेकर राजधानी में तैयारियां शुरू हो गई हैं। सकल दिगंबर जैन समाज, पंचायत कमेटी ट्रस्ट और विद्योदय तीथं समिति ने एमपी नगर स्थित श्री आदिनाथ जिनालय को केंद्र बनाकर व्यवस्थाओं को अंतिम रूप देना शुरू कर दिया है।

समाधिस्थ राष्ट्रीय संत आचार्यश्री विद्यासागर महाराज के उत्तराधिकारी आचार्य श्री समयसागर महाराज के 15 से 18 जुलाई के बीच भोपाल पहुंचने की संभावना है। उनके

साथ 22 मुनिराज भी ससंघ विहार कर रहे हैं। चातुर्मास 25 जुलाई से होगा। कमिश्नर कार्यालय में प्रशासन और जैन समाज के प्रतिनिधियों की बैठक हुई। इसमें पार्किंग, यातायात, सुरक्षा, अस्थायी दुकानों, पेयजल, स्वच्छता को लेकर निर्देश दिए गए।

2016 जैसी तैयारी - पंचायत कमेटी ट्रस्ट भोपाल के अध्यक्ष पंकज जैन सुपारी ने बताया कि 2016 में हवीबगंज (एमपी नगर) स्थित श्री आदिनाथ जिनालय में राष्ट्रीय संत

शेष पृष्ठ 4 पर......

॥श्री महावीराय नमः॥
WONDERFUL 12 Nights / 13 Days
EUROPE
शुद्ध जैन भोजन किचन कारावैन के साथ
7 यूरोपियन देशो की सैर
2 Sep, 28 Sep, 9 Nov
यूरोप जैन मंदिर के दर्शन
FRANCE, PARIS, ITALY
GERMANY, SWITZERLAND
AUSTRIA, AMSTERDAM
ला: नेमचंद जुगल किशोर जैन तीर्थ यात्रा संघ
VAYUDOOT WORLD TRAVELS PVT. LTD.
Mob : +91 9313338256, 9810408256, 9818312056

अति प्राचीन मनोरथ पूर्ण 1008 श्री मुनिसुव्रतनाथ अतिशय क्षेत्र, प्रभुसर हस्तेड़ा जयपुर

869 साल प्राचीन मूलनायक श्री मुनिसुव्रतनाथ प्रतिमा

शांतिधारा का प्रसारण
LIVE
आरती : 7:15 - 7:45 AM
शांतिधारा : 8:30 AM
@jainmandirhasteda
नामांकित शांतिधारा पुण्यार्जन के लिए संपर्क करें:
अमित शर्मा (Manager)-9783016885
नामांकित शांतिधारा के लिए किसी भी राशि का आग्रह नहीं है।

हस्तेड़ा जैन मंदिर दूरी-दिल्ली से 250 किमी.एवं जयपुर से 65 किमी.
संपर्क सूत्रः
नितिन कुमार पाटनी (मंत्री) 9001255955
मनीष जी गंगवाल (कोषाध्यक्ष) 095880-20330

JK MASALE SINCE 1997

Buy online on jkcart.com
— Breakfast Matlab —
JK POHA
Shudh Khao Swasth Raho...

मेडिटेशन गुरु उपाध्याय श्री विहसंत सागर मुनिराज का लखनऊ में होगा चातुर्मास

16 को मंगल प्रवेश, 19 को कलश स्थापना

लखनऊ। जैन संत गणाचार्य विराग सागरजी महाराज के परम प्रभावक आज्ञानुवृती शिष्य उपाध्याय विहसंत सागर महाराज का मंगल वर्षायोग उत्तर प्रदेश की राजधानी लखनऊ के आशियाना जैन मंदिर में होने जा रहा है। पूज्य महाराजजी का 16 जुलाई को भव्य नगर प्रवेश होगा एवं 19 जुलाई को वर्षायोग मंगल कलश स्थापना समारोह होगा।

जैन संतों का वर्षायोग लगभग चार माह का होता है। वर्षा ऋतु के चार महीनों जुलाई से अक्टूबर तक के समय को चातुर्मास या वर्षायोग कहते हैं। इस दौरान जैन साधु संत मुनि, आर्यिका और उनका संघ एक ही स्थान पर रहकर साधना करते हैं। इस दौरान जैन साधु संत पदयात्रा या विहार नहीं करते हैं और एक ही नगर या मंदिर में रहकर धर्म-प्रसार, ध्यान और स्वाध्याय करते हैं। इस समय वर्षा ऋतु में छोटे जीवों, कीड़े-मकोड़ों और वनस्पतियों की उत्पत्ति अत्यधिक होती है।

निरंतर विहार करने से अनजाने में इन जीवों को नुकसान पहुँच सकता है। अहिंसा के व्रत का पालन करने के लिए संत एक ही स्थान पर स्थिर हो जाते हैं ताकि जीव हिंसा न हो। यह समय संतों के गहन ध्यान, तपस्या और श्रद्धालुओं को धार्मिक शिक्षा देने के लिए समर्पित होता है। आगम अथवा जैन शास्त्रीय विधान के अनुसार यह योग आषाढ़ शुक्ल चतुर्दशी की रात से शुरू होकर कार्तिक कृष्ण चतुर्दशी तक चलता है। यह समय संतों के गहन ध्यान, तपस्या और श्रद्धालुओं को धार्मिक शिक्षा देने के लिए समर्पित होता है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार बहुत जल्द लखनऊ की धरा एक ऐसे मेडिटेशन गुरु उपाध्याय विहसंत सागर जी महाराज का चातुर्मास होने वाला है जिनके ज्ञान, भक्ति और शक्ति से लोग एक अलग तरह की ऊर्जा प्राप्त करेंगे। चार महीने चलने वाले चातुर्मास कई तरीके के अनुष्ठान किए जाएंगे। वर्षायोग हेतु 16 जुलाई को पूज्यश्री का भव्य मंगल प्रवेश लखनऊ में होगा एवं आगामी 19 जुलाई को श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर जैन आशियाना लखनऊ में मेडिटेशन गुरु उपाध्याय श्री विहसंत सागर मुनिराज (ससंघ) अपने चातुर्मास का कलश स्थापना करेंगे। मेडिटेशन गुरु ने अपने संत जीवन में दस वर्षायोग उत्तर प्रदेश, पांच वर्षायोग दिल्ली, सात वर्षायोग मध्य प्रदेश, दो वर्षायोग छत्तीसगढ़ व एक वर्षायोग हरियाणा में किया है। जिन्होंने अब तक 80 मंदिरों का जीर्णोद्धार, 55 पंचकल्याणक, 380 वेदी प्रतिष्ठा, 95 शिखर, 780 शिखर कलशा रोहण, 47 नवीन जिन मंदिर, 13 चौबीसी मान स्तंभ, कीर्ति स्तंभ, 187 संत भवन, 59 श्री सिद्धचक्र महामण्डल विधान, 6 हॉस्पिटल, 7 जैन स्कूल व 3 भोजनशाला संचालित करवाई हैं। गुरुश्री अब तक 26 वर्षों में 90 हजार किलोमीटर की पद यात्रा कर चुके है। महाराज श्री ने आजीवन 80 चीजों को अपने खानपान से त्याग कर रखा है। जिसमें मुख्य रूप से दही, तेल और मीठी वस्तुएं शामिल हैं। वह मंदिर का जीर्णोद्धार के समय एक चीज का त्याग करते हैं। फिर संकल्प के साथ जीर्णोद्धार पूर्ण होने पर उसका आजीवन उसका त्याग करते हैं। महाराज श्री के वचन में हमेशा सरस्वती विराजमान रहती है जिनका कहा हर कार्य लगभग पूरा होता है। महाराज श्री दिन भर में चार बार लोगों को धर्म और भक्ति का ज्ञान भी देते हैं। महाराज श्री ने आजीवन हर प्रकार की दवाइयों का त्याग कर रखा है। महाराज श्री से पूरे भारतवर्ष में हजारों श्रद्धालु जुड़े हुए हैं। महाराज श्री की भक्ति से हमेशा लोगों का कल्याण हुआ है।

स्पर्श जैन पहाड़िया द्वारा मॉडलिंग क्षेत्र में अपनी पहली ही प्रस्तुति में शानदार सफलता

स्पर्श जैन पहाड़िया ने मॉडलिंग के क्षेत्र में अपनी पहली ही प्रस्तुति में शानदार सफलता अर्जित कर हमारे परिवार एवं समाज का मान बढ़ाया है।

दिनांक 3 जुलाई 2026 को जबलपुर (मध्य प्रदेश) के स्पोर्ट्स क्लब, तिलहरी में आयोजित प्रतिष्ठित सेंट्रल आइकॉन इंडिया 2026 (Mr., Miss, Mrs, & Miss Teen) प्रतियोगिता में स्पर्श ने अपनी प्रतिभा, आत्मविश्वास और उत्कृष्ट व्यक्तित्व का प्रभावशाली प्रदर्शन करते हुए Mr. Category में प्रथम रनर-अप (1st Runner-Up) का सम्मान प्राप्त किया। इसके साथ ही वह इस राष्ट्रीय स्तर की प्रतियोगिता के फाइनलिस्ट के रूप में भी चयनित हुए।

पहले ही प्रयास में मिली यह उल्लेखनीय परिवार, जैन समाज तथा सभी शुभचिंतकों के लिए अत्यंत गर्व और हर्ष का विषय है। यह सफलता स्पर्श की मेहनत, लगन, अनुशासन और आत्मविश्वास का सुंदर परिणाम है। स्पर्श जैन पहाड़िया, श्री संजोग जैन पहाड़िया एवं श्रीमती अभिलाषा जैन पहाड़िया के सुपुत्र तथा श्री महीपाल जैन पहाड़िया एवं श्रीमती शकुन जैन पहाड़िया के पौत्र हैं।

शेष पृष्ठ 3 का....

आचार्य विद्यासागर महाराज के चातुर्मास के दौरान जिस स्तर की व्यवस्थाएं की गई थीं, उसी तर्ज पर इस बार भी तैयारियां की जा रही हैं।

अनियत पदविहार - मुख्य संयोजक राकेश जैन ओएसडी ने बताया कि आचार्य श्री 108 समयसागर महाराज अनियत पदविहार कर रहे हैं। उन्होंने बताया कि मेट्रो स्टेशन के नीचे 18 हजार वर्ग फीट का मुख्य डोम तैयार किया जाएगा। यहां सीसीटीवी कैमरों से निगरानी की जाएगी।

विद्यासागर की प्रेरणा - रानी कमलापति स्टेशन के समीप पीले पत्थरों से निर्माणाधीन देश के सबसे ऊंचे दिगंबर जैन मंदिर का निर्माण तेजी से जारी है। करीब 153 फीट ऊंचे इस मंदिर का निर्माण राष्ट्रीय संत आचार्य विद्यासागर महाराज की प्रेरणा से वर्ष 2015 में शुरू हुआ था। यह देश के प्रमुख जैन तीर्थों में होगा।

आचार्य श्री समय सागर जी महाराज के मंगल आशीर्वाद से संभावित चातुर्मास-2026- मुनिश्री योग सागर जी-आंवा, मुनिश्री नियम सागर जी-पुणे, मुनिश्री प्रमाण सागर जी-गुणायतन, मुनिश्री अभय सागर जी-सागर, मुनिश्री निर्वेग सागर जी-लखनादौन, मुनिश्री प्रसाद सागर जी -अकलतरा, मुनिश्री अक्षय सागर जी-पुणे, मुनिश्री प्रबोध सागर जी-खुरई, मुनिश्री प्रयोग सागर जी-गंजबासौदा, मुनिश्री निर्णय सागर जी-विदिशा, मुनिश्री वृषभ सागर जी-पुणे, मुनिश्री अजित सागर जी-पुणे, मुनिश्री संभव सागर जी-गुना, मुनिश्री श्रेयांश सागर जी -सिलवानी, मुनिश्री वीर सागर जी-बैंगलोर, मुनिश्री विशद सागर जी-ललितपुर, मुनिश्री विराट सागर जी-बालाघाट, मुनिश्री महा सागर जी-गैरतगंज, मुनिश्री दुर्लभ सागर जी-पिपरई, मुनिश्री विनम्र सागर जी-दिल्ली, मुनिश्री निर्दोष सागर जी-पनागर, मुनिश्री निरोग सागर जी-बंधा, मुनिश्री निष्पक्ष सागर जी-अजमेर, मुनिश्री निष्कम्प सागर जी -जबलपुर, मुनिश्री निरापद सागर जी-मुंगावली, मुनिश्री निराकुल सागर जी -उस्मानाबाद, मुनिश्री नीरज सागर जी मड़ावरा, मुनिश्री श्रमण सागर जी-राघौगढ़, मुनिश्री निराकार सागर जी-अमरावती, आर्यिका विज्ञानमति जी-गोटेगांव, आर्यिका ऋजुमति जी-बुढ़ार, आर्यिका तपोमति जी-डोंगरगांव, आर्यिका गुणमति जी-छिंदवाड़ा, आर्यिका प्रशांतमति जी-तेंदूखेड़ा, आर्यिका पूर्णमति जी -देहरादून, आर्यिका अनंतमति जी-कोतमा, आर्यिका विमलमति जी-पिंडरई, आर्यिका चिंतनमति जी-दमोह, आर्यिका वैराग्यमति जी-गौरझामर, आर्यिका दुर्लभमति जी-बंडा, आर्यिका अपूर्वमति जी-चंदेरी, आर्यिका सूत्रमति जी-सिहोरा, आर्यिका सिद्धांतमति जी-वारा सिवनी, आर्यिका विलक्षणा मति जी-बरगी, आर्यिका धारणामति जी-बरेला।

परमपूज्य अभीक्ष्ण ज्ञानोपयोगी, चतुर्थ पट्टाचार्य, उपसर्ग विजेता, विद्यावाचस्पति, प्राकृताचार्य, प्रज्ञावारिधि, अप्रतिम गुरुभक्त शिरोमणि, राष्ट्रसंत, अर्वाचीन नेमिचंद सिद्धांत चक्रवर्ती, सूरि आदि सन्मति रत्न, उदारमना, वात्सल्य रत्नाकर, बहुभाषाविद, त्रिभाषा कवि, चारित्र भूषण, मौनप्रिय, अध्यात्म योगी, सुकोमल हृदयी, कठोर तपस्वी, श्रमणपरंपरा संवर्धक, अभिनव कुंदकुंद, सर्वोदयी संत, वर्तमान के वर्धमान, चर्या चक्रवर्ती, युवा प्रवर्तक, परम प्रभावक, विश्व गौरव, जिनवाणी कंठभूषण, ऊर्जा के ऊर्जागार, राष्ट्रगौरव आचार्य श्री सुनील सागर जी गुरुदेव की जय

सन्मतिसुनीलम्

बीसवीं सदी के मुनिकुंजर ज्येष्ठाचार्य आदिसागर जी (अंकलीकर) के चतुर्थ पट्टाधीश, प्राकृत ज्ञान केसरी, चर्या चक्रवर्ती, महासंघ नायक, विश्वहितकारी, वात्सल्य मूर्ति, सरल स्वभावी, चरित्र रत्नाकर, विद्यावारिधी, क्षेत्र जीर्णोद्धारक आचार्य श्री सुनील सागर जी महाराज के चरणों में शत् शत् नमन, वंदन।

बुरा वक्त ही सिखाता है कि अच्छा वक्त किसके साथ बिताना है

-: नमनकर्ता :-

सुरेश कुमार संघवी बांसवाड़ा
अशोक कुमार जैन बड़ोदरा
श्रीमती कमलेश जैन बड़ोदरा
अल्पेश शाह बड़ोदरा
स्वेताम्ग भाई शाह बड़ोदरा

श्रीमती अलका बड़जात्या बड़ोदरा
पारस विपुल शाह ईडर
श्री भैरूनाथ पेन्टस एकलिंगपुरा उदयपुर
अशोक चान्दवाड़ कीर्ति नगर जयपुर
मणिबेन साकलचन्द शाह भयन्दर मुम्बई

मदन जैन हुमंड बड़ोदरा
प्रमिल बेन जय कुमार शाह मुम्बई
रमेश कुमार यशवन्त कुमार जैन मुम्बई
पवन कुमार बड़जात्या निवासी मरवा प्रवासी किशनगढ़

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

हार्दिक शुभकामनाओं सहित
SANTOSH JAIN & ASSOCIATES
SWATI VINIMAY & CONSULTANCY PVT. LTD
ANAMICA TRADERS PVT. LTD.
L. N. FINANCE PVT. LTD.
OFFICE
CITY TRADE CENTRE,
Near Athgaon Flyover, A.T. Road, Guwahati-781001
M. : 94350-48488 (O) / 97060-48488 (R) / 8638773711

सी. ए. (डॉ.) संतोष काला | श्रीमती सरिता काला | संदीप-स्वाति पाटनी | श्रेयांस-स्नेहा काला

RESIDENCE : 401/501, Abhinandan Appartment, 4th Floor, H.S.Road, Chhatribari, Guwahati-781008
E-mail : casantoshkala@gmail.com

SHREE COMPLEX & SHREEMAN COMPLEX, P. O. BIJOYNAGAR-781122, DIST-KAMRUP (ASSAM)

राजधानी दिल्ली में बनेगा दिगम्बर जैन समाज का ऐतिहासिक एवं विश्वस्तरीय भवन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट के ऐतिहासिक सम्मान समारोह में जैन सांसद, नवनियुक्त ट्रस्टियों, उद्योगपतियों एवं समाजसेवियों का हुआ सम्मान, दिगम्बर जैन समाज से सहयोग का आह्वान

पवन जैन गोधा, राष्ट्रीय महामंत्री-महासभा

नई दिल्ली, 5 जुलाई। देश के सबसे प्राचीन एवं प्रतिष्ठित जैन संगठन श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट द्वारा राजधानी दिल्ली में प्रस्तावित ''प्रथम दिगम्बर जैन भवन'' के निर्माण के उद्देश्य से रविवार को आयोजित माननीय जैन सांसद एवं नवनियुक्त ट्रस्टियों का सम्मान समारोह ऐतिहासिक एवं प्रेरणादायी वातावरण में सम्पन्न हुआ। कार्यक्रम में देशभर से आए समाज के प्रतिष्ठित उद्योगपतियों, जनप्रतिनिधियों, समाजसेवियों एवं ट्रस्टियों ने भाग लेकर इस महत्वाकांक्षी परियोजना को सफल बनाने का संकल्प लिया। समारोह की अध्यक्षता महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल ने की।

कार्यक्रम का शुभारंभ मंगलाचरण एवं दीप प्रज्ज्वलन के साथ हुआ। दीप प्रज्ज्वलन राज्यसभा सांसद श्री राजेन्द्र जैन, राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जैन गंगवाल, राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा, डॉ. श्रेयांस जैन एवं श्री रमेश जैन झझर एवं अन्य पदाधिकरियों द्वारा किया गया।

महासभा की गौरवशाली 131 वर्ष की सेवा यात्रा का हुआ उल्लेख: समारोह के प्रभावी एवं गरिमामय स्वागत भाषण में श्री गजेन्द्र बज जी ने महासभा की 131 वर्षों की गौरवशाली यात्रा, सामाजिक एवं धार्मिक उपलब्धियों तथा संगठन द्वारा संचालित कार्यों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि महासभा केवल एक संगठन नहीं, बल्कि जैन समाज की एक सशक्त राष्ट्रीय पहचान है। उन्होंने बताया कि महासभा की विभिन्न इकाइयाँ तीर्थ संरक्षिणी महासभा, श्रुत संवर्धिनी महासभा, महिला महासभा एवं युवा महासभा देशभर में धर्म प्रभावना, संस्कार संरक्षण, शिक्षा, सेवा एवं सामाजिक जागरण के क्षेत्र में निरंतर सक्रिय हैं।

''दिल्ली की इस पावन धरा पर, होगा गौरव गान। प्रथम दिगम्बर जैन भवन, बने समाज की शान।।'' श्री गजेन्द्र बज जी ने बड़े ही सुंदर दोहे के माध्यम से'' प्रथम दिगम्बर जैन भवन'' की भावपूर्ण व्याख्या करते हुए समाज को इस ऐतिहासिक अभियान में तन, मन एवं धन से सहयोग करने का प्रेरणादायी आह्वान किया। उनके ओजस्वी एवं प्रभावशाली मंच संचालन ने पूरे समारोह को गरिमामय एवं उत्साहपूर्ण बना दिया।

उन्होंने कहा कि पोण्डर समाज अपनी धर्मनिष्ठा, सेवा, संगठन शक्ति एवं दानशीलता के लिए देशभर में विशिष्ट पहचान रखता है। समाज के प्रत्येक परिवार को धर्म, संस्कार और संगठन के कार्यों में बढ़-चढ़कर भाग लेना चाहिए। प्राचीन जैन तीर्थ हमारी आध्यात्मिक एवं सांस्कृतिक धरोहर हैं। आदरणीय राजकुमार जैन सेठी जी ने अब तक लगभग 750 मंदिरों का जीर्णोद्धार करवाया। उन्होंने सभी समाजबंधुओं से आह्वान किया कि वे तीर्थों के संरक्षण एवं जीर्णोद्धार के लिए तन, मन और धन से सहयोग करें ताकि आने वाली पीढ़ियाँ भी इस गौरवशाली विरासत का लाभ प्राप्त कर सकें। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि संगठित प्रयास, सेवा भावना एवं समाज की एकजुटता से धर्म प्रभावना और तीर्थ संरक्षण के कार्यों को नई गति एवं नई दिशा मिलेगी।

''नेतृत्व सक्षम हो तो बड़े सपने भी साकार होते हैं'' - विशिष्ट अतिथि डॉ. श्रेयांस जैन ने कहा कि श्री गजराज जैन गंगवाल के नेतृत्व में महासभा नए कीर्तिमान स्थापित करेगी। स्व. श्री निर्मल कुमार जैन का सपना था कि कि महासभा का देश की राजधानी में अपना भवन हो।

दिगम्बर जैन भवन बनेगा विश्वभर के जैन समाज का केंद्र: श्री जयकुमार जी उपाध्ये ने प्रस्तावित भवन की विस्तृत जानकारी देते हुए कहा कि यह केवल एक भवन नहीं होगा, बल्कि विश्व स्तर पर जैन धर्म, दर्शन, संस्कृति, शोध, प्रशिक्षण एवं समाज सेवा का प्रमुख केंद्र बनेगा। उन्होंने समाज के प्रत्येक वर्ग से इस पुनीत कार्य में ट्रस्टी बनकर आर्थिक एवं नैतिक सहयोग करने का आग्रह किया।

अपने अध्यक्षीय उद्बोधन में श्री गजराज जैन गंगवाल ने कहा कि महासभा ने सदैव समाजहित, धर्मरक्षा एवं राष्ट्रीय दायित्वों का निर्वहन किया है। प्रस्तावित प्रथम दिगम्बर जैन भवन भविष्य की पीढ़ियों के लिए प्रेरणा, संगठन एवं सेवा का स्थायी केंद्र बनेगा।

उन्होंने बताया कि राजधानी दिल्ली के राणा प्रताप बाग मेन रोड़ पर लगभग 1608 वर्ग गज भूमि पर सर्वसुविधायुक्त बहुउद्देशीय भवन के निर्माण हेतु भूमि क्रय की प्रक्रिया प्रगति पर है। भवन में सभागार, पुस्तकालय, शोध केंद्र, अतिथि गृह, धर्मशाला, कार्यालय, प्रशिक्षण केंद्र तथा समाजोपयोगी गतिविधियों की आधुनिक सुविधाएँ युक्त होंगी।

महासभा की उपलब्धियों का किया उल्लेख: श्री गंगवाल ने कहा कि महासभा ने समय समय पर समाजहित के अनेक ऐतिहासिक कार्य किए हैं। दिल्ली में भारत मंडपम में यशस्वी प्रधानमंत्री श्री नरेन्द्र मोदी द्वारा भगवान महावीर 2550वाँ जन्म कल्याणक समारोह का उद्घाटन 21 अप्रैल 2024 को किया गया। जैन समाज के चारों आम्नायों

शेष पृष्ठ 06 पर...

jaingazette2@gmail.com 7607921391

जैन गज़ट शिकायत 9415008344 जैन गज़ट

द्वारा स्वीकृत दिगम्बर जैन प्रतिमा प्रधानमंत्री जी को उनके द्वारा भेंट की गई। राष्ट्रीय संत सुरक्षा अभियान, जैन तीर्थों के संरक्षण, पर्यावरण संरक्षण, जैन जनगणना जागरूकता अभियान तथा समाजहित से जुड़े अनेक राष्ट्रीय मुद्दों पर महासभा निरंतर सक्रिय रही है। सराक क्षेत्र पवित्र एवं शाश्वत जैन तीर्थ स्थल श्री सम्मेद शिखर जी के नजदीक है। वहां लगभग (20) बीस लाख सराक जैन रहते हैं। महासभा द्वारा वहां अप्रैल 2025 में पंचकल्याणक कराया गया। अब वे जैन समाज से जुड़ गये हैं।

उन्होंने बताया कि महासभा द्वारा 05 जनवरी 2023 को भारत सरकार द्वारा श्री सम्मेद शिखर जी की समस्याओं का सुखद निराकरण किया गया एवं गिरनार जी, श्रवणबेलगोला, मोर पंख आदि से संबंधित विभिन्न कार्य तथा समाजहित के अनेक महत्वपूर्ण विषयों पर समाधान हेतु विभिन्न राज्यों के मुख्यमंत्रियों, केंद्रीय मंत्रियों एवं संबंधित विभागों को अनेक ज्ञापन एवं पत्र प्रेषित किए गए हैं।

मुख्य अतिथि राज्यसभा सांसद श्री राजेन्द्र जैन ने कहा कि श्री गजराज जैन गंगवाल का नाम पूरे देश में सत्यनिष्ठा, सेवा एवं संगठन क्षमता के लिए सम्मानपूर्वक लिया जाता है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि प्रस्तावित दिगम्बर जैन भवन जैन समाज की सांस्कृतिक पहचान का प्रतीक बनेगा तथा देश-विदेश से आने वाले साधु-साध्वियों, शोधार्थियों एवं श्रद्धालुओं के लिए अत्यंत उपयोगी सिद्ध होगा।

उन्होंने जैन संतों की सुरक्षा को समय की आवश्यकता बताते हुए केंद्र एवं राज्य सरकारों से प्रभावी सुरक्षा व्यवस्था सुनिश्चित करने की आवश्यकता पर भी बल दिया।

उन्होंने कहा कि श्री पवन जैन जी ने जिस निष्ठा, ईमानदारी एवं समर्पण के साथ समाज सेवा और संगठन को नई दिशा दी है, वह अत्यंत प्रेरणादायक है। उन्होंने विश्वास व्यक्त करते हुए कहा, ''मेरी हार्दिक इच्छा है कि भविष्य में गजराज जैन गंगवाल एवं पवन जी भी विधायिका में पहुँचकर जैन समाज और राष्ट्र की प्रभावी आवाज बनें। उनके व्यक्तित्व में एक सफल जनप्रतिनिधि के सभी गुण विद्यमान हैं।'' इस उद्गार पर सभागार तालियों की गड़गड़ाहट से गूंज उठा।

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा के राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा जी ने अपने संबोधन में कहा कि ''महासभा केवल एक संगठन नहीं, बल्कि दिगम्बर जैन समाज की आस्था, एकता एवं सेवा का राष्ट्रीय मंच है। प्रस्तावित 'प्रथम दिगम्बर जैन भवन' आने वाली पीढ़ियों के लिए धर्म, संस्कृति, संगठन एवं सेवा का प्रेरणास्रोत बनेगा। यह भवन समाज की सामूहिक आस्था, समर्पण और सहयोग का जीवंत प्रतीक होगा।

उन्होंने आगे कहा कि ''जब समाज किसी महान उद्देश्य के लिए एकजुट होकर संकल्प लेता है, तब असंभव लक्ष्य भी सहज ही साकार हो जाते हैं। आज आवश्यकता है कि प्रत्येक समाजबंधु इस ऐतिहासिक अभियान में ट्रस्टी बनकर अपनी भागीदारी सुनिश्चित करे। यह केवल भवन निर्माण नहीं, बल्कि जैन समाज के उज्ज्वल भविष्य की आधारशिला रखने का पावन अवसर है।''

''संकल्पों से सिद्धि है, सेवा सबसे मान। जन-जन के सहयोग से, बने धर्म की शान।।''

नवनियुक्त ट्रस्टियों का हुआ भव्य सम्मान-समारोह में देशभर से जुड़े नवनियुक्त ट्रस्टियों का शॉल, स्मृति-चिह्न एवं सम्मान-पत्र भेंट कर अभिनंदन किया गया। सर्वप्रथम राज्यसभा सांसद श्री राजेन्द्र जैन का विशेष सम्मान किया गया, तत्पश्चात सभी नवनियुक्त ट्रस्टियों को सम्मानित किया गया।

धर्म, संस्कृति, सेवा एवं संगठन के इस ऐतिहासिक महायज्ञ में सहभागी बनने का आह्वान जैसे ही किया गया, सभागार का

वातावरण अद्‌भुत उत्साह और श्रद्धा से भर उठा। समाज के अनेक भामाशाह ने बिना किसी आग्रह की प्रतीक्षा किए स्वयं आगे आए और विभिन्न श्रेणियों में ट्रस्टी बनने की सहर्ष स्वीकृति प्रदान की। शिरोमणि ट्रस्टी (रू 1 करोड़), डायमंड ट्रस्टी (रू. 51 लाख), गोल्डन ट्रस्टी (रू. 21 लाख), सिल्वर ट्रस्टी (रू. 11 लाख) तथा सम्मानित ट्रस्टी (रू. 1,11,111) के रूप में समाजबंधुओं ने जिस उत्साह, श्रद्धा और समर्पण के साथ अपनी सहभागिता सुनिश्चित की, वह दृश्य अत्यंत भाव-विभोर करने वाला था। ऐसा प्रतीत हो रहा था मानो सम्पूर्ण सभागार धर्मभक्ति, सेवा-संकल्प और सामाजिक एकता की दिव्य आभा से आलोकित हो उठा हो। उपस्थित प्रत्येक व्यक्ति के हृदय में इस ऐतिहासिक अभियान का सहभागी बनने का उत्साह स्पष्ट रूप से दिखाई दे रहा था। अंत में राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री गजराज जी जैन गंगवाल ने समारोह का अत्यंत प्रभावशाली, गरिमामय एवं अनुशासित मंच संचालन करने के लिए श्री गजेन्द्र बज की मुक्तकंठ से प्रशंसा की। उन्होंने कहा कि श्री बज के प्रभावी संचालन, संतुलित प्रस्तुतीकरण, मधुर वाणी, ओजस्वी अभिव्यक्ति एवं समयबद्ध संचालन ने पूरे कार्यक्रम को विशेष गरिमा प्रदान की तथा उपस्थित सभी अतिथियों पर सकारात्मक एवं प्रेरणादायी प्रभाव छोड़ा। उन्होंने कहा कि किसी भी सफल आयोजन की आत्मा उसका सशक्त संचालन होता है, और श्री गजेन्द्र बज ने अपने उत्कृष्ट मंच संचालन से इस समारोह को यादगार बना दिया। श्री गंगवाल जी ने श्री गजेन्द्र बज को सम्मानित करते हुए उनके अमूल्य योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। उन्होंने समारोह की उत्कृष्ट बैठक व्यवस्था के लिए श्री शरद कासलीवाल की विशेष सराहना की। उन्होंने कहा कि श्री कासलीवाल के समर्पण, सूझबूझ एवं कुशल व्यवस्था के कारण कार्यक्रम अत्यंत सुव्यवस्थित एवं गरिमामय ढंग से संपन्न हुआ। इस अवसर पर उन्होंने उनके सराहनीय योगदान के लिए हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित किया। अंत में राष्ट्रीय महामंत्री श्री पवन जैन गोधा जी ने कार्यक्रम में पधारे सभी विशिष्ट अतिथियों, गणमान्य नागरिकों, ट्रस्टियों, समाजबंधुओं एवं कार्यकर्ताओं के प्रति हृदय से आभार व्यक्त किया। उन्होंने कहा कि सभी के सहयोग, समर्पण एवं सक्रिय सहभागिता से यह समारोह अत्यंत सफल, गरिमामय एवं ऐतिहासिक रूप से संपन्न हुआ। श्री गोधा जी ने कार्यक्रम की सफलता में प्रत्यक्ष एवं अप्रत्यक्ष रूप से सहयोग देने वाले प्रत्येक सहयोगी के प्रति हार्दिक धन्यवाद ज्ञापित करते हुए भविष्य में भी इसी प्रकार संगठन एवं समाजहित के कार्यों में निरंतर सहयोग की अपेक्षा व्यक्त की।

शेष चित्र पृष्ठ 7 पर...

परम पूज्य वात्सल्य वारिधि, जिन धर्म प्रभावक, राष्ट्र गौरव आचार्य श्री 108 वर्धमान सागर जी महाराज एवं समस्त मुनि संघ के चरणों में

शत् शत् नमन, शत् शत् वंदन

नमनकर्ता: राजेन्द्र कुमार जैन, भागचन्द्र जैन एवं समस्त छाबड़ा परिवार

'Manik Ratan Bldg', By lane Kamal Patrol Pump, H. B. Road, Machkhowa, Guwahati - 781009

Jain Group

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा चेरिटेबल ट्रस्ट के ऐतिहासिक सम्मान समारोह में जैन सांसद, नवनियुक्त ट्रस्टियों, उद्योगपतियों एवं समाजसेवियों के दिल्ली में सम्पन्न सम्मान समारोह की झलकियां

शेष पृष्ठ 06 का...

कषाय खींचने वाले कभी सुखी नहीं होते हैं

जैन गज़ट शिकायत 9415008344 जैन गज़ट

पहले बच्चे माँ-बाप का मुँह ताकते थे, अब माँ-बाप बच्चों का मुँह ताकते हैं

डॉ. संतोष जैन
काला (CA)
गुवाहाटी
मो. 9435048488

गतांक का शेष

5. विदेश जाने की बढ़ती प्रवृत्ति: आज के समय में शिक्षा और बेहतर रोजगार की तलाश में युवाओं का विदेश जाना एक सामान्य और स्वाभाविक प्रक्रिया बन गई है। हर माता-पिता अपने बच्चों को आगे बढ़ते देखना चाहते हैं, इसलिए वे भी इस निर्णय का समर्थन करते हैं। लेकिन इस प्रगति के पीछे एक भावनात्मक सच्चाई छिपी है-अकेले होते माता-पिता। भारत के अनेक शहरों में हजारों बुजुर्ग ऐसे हैं, जिनके बच्चे विदेश में बस चुके हैं। आर्थिक रूप से वे सुरक्षित होते हैं, उनके बैंक खातों में धन की कमी नहीं होती, परंतु उनके जीवन में भावनात्मक खालीपन गहराता जाता है। त्योहारों की रौनक फीकी हो जाती है, घर की चहल-पहल सन्नाटे में बदल जाती है। ''पैसा बैंक खाते को भर सकता है, पर माता-पिता के दिल का खालीपन नहीं भर सकता।'' यह स्थिति हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि प्रगति के साथ संवेदनाओं का संतुलन बनाए रखना कितना आवश्यक है।

6. तकनीक ने संवाद कम कर दिया: तकनीक ने हमारे जीवन को जितना आसान बनाया है, उतना ही उसने रिश्तों की गहराई को भी प्रभावित किया है। आज मोबाइल और इंटरनेट ने दुनिया को हमारी मुट्ठी में ला दिया है, लेकिन इसी ने अपनों के बीच की दूरी भी बढ़ा दी है। पहले परिवार के सभी सदस्य दिनभर के काम के बाद शाम को एक साथ बैठकर अपने अनुभव साझा करते थे, जिससे आपसी समझ और अपनापन बढ़ता था। आज वही समय मोबाइल स्क्रीन में खोकर बीत जाता है। माता-पिता कई बार बच्चों से बात करने की इच्छा रखते हैं, लेकिन अक्सर उन्हें ''अभी व्यस्त हूँ'' जैसा उत्तर मिलता है। यह केवल शब्द नहीं, बल्कि एक भावनात्मक दूरी का संकेत है। ''जहाँ संवाद समाप्त हो जाता है, वहाँ रिश्तों की जड़ें सूखने लगती हैं।'' यदि समय रहते इस स्थिति को नहीं सुधारा गया, तो रिश्तें में केवल औपचारिकता ही रह जाएगी।

7. वृद्धाश्रम - समाज का दर्दनाक आईना: वृद्धाश्रमों की बढ़ती संख्या हमारे समाज के बदलते स्वरूप का एक कड़वा सच प्रस्तुत करती है। कभी माता-पिता अपने बच्चों के पालन-पोषण के लिए हर कठिनाई सहते थे, अपने सुखों का त्याग कर उनके भविष्य को संवारते थे। लेकिन आज वही माता-पिता जीवन के अंतिम चरण में अकेलेपन का सामना करने को मजबूर हैं। वृद्धाश्रम केवल एक इमारत नहीं, बल्कि उन अधूरे रिश्तों और टूटी उम्मीदों का प्रतीक बनते जा रहे हैं। वहाँ रहने वाले बुजुर्गों की आँखों में अपने बच्चों के लिए इंतजार और दिल में अनकहा दर्द होता है। ''जिसने उंगली पकड़कर चलना सिखाया, आज वही सहारे के लिए किसी हाथ की तलाश में है।'' यह स्थिति समाज को आत्ममंथन करने के लिए मजबूर करती है कि कहीं हम आधुनिकता की दौड़ में अपने मूल्यों को तो नहीं खो रहे।

8. भारतीय संस्कृति और माता-पिता का सम्मान: भारतीय संस्कृति में माता-पिता को सर्वोच्च स्थान दिया गया है। ''मातृदेवो भव, पितृदेवो भव'' केवल एक वाक्य नहीं, बल्कि जीवन जीने की दिशा है। यह हमें सिखाता है कि माता-पिता हमारे लिए ईश्वर के समान हैं, जिनके प्रति सम्मान और सेवा हमारा कर्तव्य है। जैन दर्शन भी कृतज्ञता को धर्म का मूल मानता है। कृतज्ञता वह भावना है, जो हमें अपने मूल से जोड़कर रखती है और हमें सच्चा मनुष्य बनाती है। जो संतान अपने माता-पिता के त्याग, प्रेम और उपकार को भूल जाती है, वह जीवन की सबसे बड़ी नैतिक परीक्षा में असफल हो जाती है।

आधुनिकता के इस युग में यह और भी आवश्यक हो गया है कि हम अपनी संस्कृति और मूल्यों को समझें और उन्हें अपने जीवन में उतारें, ताकि प्रगति के साथ-साथ हमारे संस्कार भी जीवित रहें।

9. एक मार्मिक उदाहरण: एक बुजुर्ग दंपति के दो बेटे थे, जो बेहतर भविष्य की तलाश में विदेश जाकर बस गए। वे हर महीने अपने माता-पिता को पैसे भेजते थे, जिससे उनकी सभी भौतिक जरूरतें पूरी हो जाती थीं। बाहर से देखने पर ऐसा लगता था कि उन्हें किसी चीज की कमी नहीं है। लेकिन एक दिन जब किसी ने उनसे पूछा कि क्या उन्हें किसी चीज की कमी है, तो बुजुर्ग पिता ने मुस्कुराते हुए कहा- ''कमी तो नहीं है.. बस कभी-कभी लगता है कि घर में आवाजें कम हो गई हैं।'' यह एक साधारण सा वाक्य नहीं, बल्कि गहरे दर्द की अभिव्यक्ति है। यह बताता है कि जीवन में धन से अधिक महत्व अपनों की उपस्थिति और उनके साथ बिताए गए समय का होता है। यह उदाहरण हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि क्या हम अपने माता-पिता को वह स्नेह और साथ दे पा रहे हैं, जिसकी उन्हें वास्तव में आवश्यकता है।

10. माता-पिता की सबसे बड़ी इच्छा: माता-पिता की इच्छाएँ बहुत सरल और सच्ची होती हैं। वे अपने बच्चों से न तो महंगे उपहार चाहते हैं और न ही बड़ी-बड़ी सुविधाएँ। उनकी सबसे बड़ी इच्छा होती है-अपने बच्चों का थोड़ा सा समय, थोड़ा सा सम्मान और थोड़ा सा स्नेह। जीवन के अंतिम पड़ाव में उन्हें भौतिक सुखों से ज्यादा भावनात्मक सहारे की आवश्यकता होती है। जब बच्चे उनके साथ बैठकर कुछ पल बातें करते हैं, उनकी भावनाओं को समझते हैं, तो वही उनके लिए सबसे बड़ी खुशी बन जाती है। ''बुजुर्गों को दवा से ज्यादा अपनों की दुआ की जरूरत होती है।'' यह वाक्य हमें यह याद दिलाता है कि हमारे माता-पिता के लिए हमारा साथ ही सबसे बड़ी दवा है। यदि हम अपने व्यस्त जीवन में से थोड़ा समय निकालकर उन्हें दे सकें, तो यही उनके लिए सबसे अनमोल उपहार होगा।

11. समाधान क्या है : समस्या चाहे कितनी भी गंभीर क्यों न हो, उसका समाधान हमेशा हमारे अपने व्यवहार और प्राथमिकताओं में छिपा होता है। आज परिवारों में बढ़ती दूरियाँ, बुजुर्गों की उपेक्षा और भावनात्मक खालीपन का मूल कारण यह है कि हमने अपने जीवन की प्राथमिकताओं को बदल दिया है। यदि हम इन्हें सही दिशा में पुनः व्यवस्थित करें, तो यह समस्या काफी हद तक समाप्त हो सकती है। सबसे पहला और सबसे महत्वपूर्ण समाधान है-संवाद बनाए रखना। संवाद केवल औपचारिक बातचीत नहीं, बल्कि दिल से जुड़ने का माध्यम है। आज के व्यस्त जीवन में हम दिनभर सैकड़ों लोगों से बात करते हैं, लेकिन अपने माता-पिता से दो सच्चे शब्द भी नहीं बोल पाते। यदि हम प्रतिदिन कुछ समय निकालकर उनसे बात करें, उनकी बातें सुनें, उनकी भावनाओं को समझें, तो वे अपने आप को अकेला नहीं महसूस करेंगे। संवाद रिश्तों की वह डोर है जो दूरियों को भी पास में बदल देती है।

दूसरा महत्वपूर्ण बिंदु है-साथ बिताया गया समय। समय वह सबसे कीमती उपहार है, जो हम किसी को दे सकते हैं। सप्ताह में एक दिन परिवार के नाम करना कोई बड़ी बात नहीं है, लेकिन इसका प्रभाव बहुत गहरा होता है। जब पूरा परिवार एक साथ बैठता है, हँसता है, बातें करता है, तो रिश्तों में नई ऊर्जा का संचार होता है। यह समय केवल मोबाइल या टीवी के साथ नहीं, बल्कि एक-दूसरे के साथ होना चाहिए। यही छोटे-छोटे पल जीवन की सबसे बड़ी खुशियाँ बन जाते हैं।

तीसरा बिंदु है-सम्मान का भाव। माता-पिता केवल हमारे जन्मदाता नहीं, बल्कि हमारे पहले गुरु होते हैं। उनके अनुभव जीवन की सबसे बड़ी पूंजी हैं। आज की युवा पीढ़ी अक्सर यह भूल जाती है कि जिस रास्ते पर वे चल रहे हैं, उस पर उनके माता-पिता पहले ही चल चुके हैं। यदि हम उनके अनुभवों का सम्मान करें, उनकी सलाह को महत्व दें, तो न केवल हमारा जीवन बेहतर होगा, बल्कि उन्हें भी यह महसूस होगा कि उनका अस्तित्व अभी भी महत्वपूर्ण है।

चौथा और सबसे संवेदनशील पहलू है-भावनात्मक सहारा देना। बुजुर्गों को केवल दवाइयों या पैसों की जरूरत नहीं होती, उन्हें जरूरत होती है अपनापन और सुरक्षा की भावना की। उन्हें यह महसूस होना चाहिए कि वे आज भी परिवार का अभिन्न हिस्सा हैं, उनका होना महत्वपूर्ण है। एक छोटा सा स्नेह भरा स्पर्श, एक प्रेम भरी मुस्कान, या एक आश्वासन भरा शब्द उनके जीवन को खुशियों से भर सकता है।

अंततः यह समझना आवश्यक है कि परिवार केवल साथ रहने का नाम नहीं, बल्कि साथ निभाने का नाम है। यदि हम इन चार सरल उपायों-संवाद, समय, सम्मान और भावनात्मक सहारे-को अपने जीवन में उतार लें, तो न केवल हमारे परिवार मजबूत होंगे, बल्कि समाज भी अधिक संवेदनशील और सुदृढ़ बनेगा। यही वह मार्ग है, जो हमें एक खुशहाल और संतुलित जीवन की ओर ले जाता है।

12. एक प्रेरक घटना: जीवन में कई बार ऐसे क्षण आते हैं, जब हमें यह निर्णय लेना पड़ता है कि हमारे लिए वास्तव में क्या अधिक महत्वपूर्ण है-भौतिक सफलता या पारिवारिक मूल्य। ऐसी ही एक प्रेरक घटना हमें यह सिखाती है कि संस्कार और परिवार के प्रति कर्तव्य किसी भी उपलब्धि से बड़े होते हैं। एक युवा अधिकारी, जो विदेश में एक प्रतिष्ठित पद पर कार्यरत था, अपने करियर के सर्वोत्तम दौर में था। उसके पास अच्छा वेतन, सुविधाएँ और एक उज्ज्वल भविष्य था। लेकिन एक दिन उसे सूचना मिली कि उसके पिता गंभीर रूप से बीमार हैं। यह खबर सुनते ही उसके सामने एक कठिन निर्णय खड़ा हो गया-क्या वह अपनी नौकरी को प्राथमिकता दे या अपने पिता के पास जाए? उसके मित्रों और सहकर्मियों ने उसे समझाया कि इतनी बड़ी नौकरी में अचानक छुट्टी लेना ठीक नहीं है। उन्होंने उसे करियर की अहमियत बताई, भविष्य के अवसरों का हवाला दिया और यह भी कहा कि ऐसे मौके बार-बार नहीं मिलते। लेकिन उस युवक ने जो उत्तर दिया, वह केवल एक जवाब नहीं था, बल्कि उसके संस्कारों का प्रतिबिंब था। उसने कहा - ''नौकरी फिर मिल जाएगी, पर पिता नहीं।'' यह वाक्य साधारण लग सकता है, लेकिन इसके भीतर गहरा जीवन दर्शन छिपा है। यह हमें याद दिलाता है कि जीवन में कुछ चीजें ऐसी होती हैं, जिनका कोई विकल्प नहीं होता। माता-पिता का स्थान उनमें सबसे ऊपर है। पैसा, पद और प्रतिष्ठा फिर से प्राप्त किए जा सकते हैं, लेकिन माता-पिता का स्नेह और उनका साथ एक बार खो जाए, तो वह कभी वापस नहीं आता।

यह घटना हमें यह भी सिखाती है कि सच्ची सफलता वही है, जिसमें हम अपने कर्तव्यों का पालन करें। आज के युग में, जब युवा पीढ़ी करियर की दौड़ में इतनी व्यस्त हो गई है कि परिवार के लिए समय निकालना भी मुश्किल हो गया है, यह घटना एक आईना है। अंततः यह प्रेरक घटना हमें यही संदेश देती है कि जीवन में संतुलन बनाए रखना आवश्यक है। करियर महत्वपूर्ण है, लेकिन परिवार उससे भी अधिक महत्वपूर्ण है। यदि हमारे पास सब कुछ हो, लेकिन माता-पिता का साथ और आशीर्वाद न हो, तो वह सफलता अधूरी है। यही संस्कार हमें एक बेहतर इंसान बनाते हैं और यही हमारी असली पहचान होते हैं।

13. अंतिम संदेश: समाज की वास्तविक शक्ति उसकी आर्थिक स्थिति में नहीं, बल्कि उसके संस्कारों में निहित होती है। आज हम एक ऐसे दौर में जी रहे हैं, जहाँ भौतिक सुख-सुविधाएँ तेजी से बढ़ रही हैं, लेकिन मानवीय मूल्य धीरे-धीरे कमजोर होते जा रहे हैं। इस परिवर्तन ने परिवारों की संरचना और रिश्तों की गहराई को प्रभावित किया है। यदि किसी घर में माता-पिता, जिन्होंने अपने पूरे जीवन को अपने बच्चों के लिए समर्पित कर दिया, वही अपने ही बच्चों के सामने असहाय और उपेक्षित हो जाएँ, तो यह केवल एक व्यक्तिगत समस्या नहीं है। यह पूरे समाज के लिए एक चेतावनी है कि हम अपनी जड़ों से दूर होते जा रहे हैं। यह स्थिति हमें यह सोचने पर मजबूर करती है कि आखिर हम कहाँ गलती कर रहे हैं। हमारे भारतीय संस्कार सदैव यह सिखाते हैं कि ''जिस घर में बुजुर्गों का सम्मान होता है, वहाँ सुख, शांति और समृद्धि स्वयं आकर बसते हैं।'' यह केवल एक कहावत नहीं, बल्कि जीवन का सत्य है। बुजुर्गों का अनुभव, उनका आशीर्वाद और उनका मार्गदर्शन किसी भी परिवार के लिए अमूल्य धरोहर होता है।

आधुनिकता को अपनाना आवश्यक है, क्योंकि समय के साथ चलना भी जीवन का एक हिस्सा है। लेकिन आधुनिकता के नाम पर अपनी संस्कृति और मूल्यों को भूल जाना सबसे बड़ी भूल है। हमें यह समझना होगा कि प्रगति और परंपरा एक-दूसरे के विरोधी नहीं हैं, बल्कि पूरक हैं। यदि हम इन दोनों के बीच संतुलन बना लें, तो हमारा जीवन अधिक समृद्ध और संतुलित हो सकता है। जीवन का सबसे बड़ा सत्य यही है कि समय के साथ भूमिकाएँ बदल जाती हैं। जब हम छोटे थे, तब हमारे माता-पिता हमारे सहारे थे। उन्होंने हमें चलना सिखाया, गिरने पर उठाया और हर कठिनाई में हमारा साथ दिया। अब जब वे वृद्ध हो रहे हैं, तो यह हमारी जिम्मेदारी है कि हम उनका सहारा बनें। यह केवल एक कर्तव्य नहीं, बल्कि हमारा नैतिक दायित्व है। अंततः, सच्ची मानवता वही है, जिसमें हम अपने माता-पिता और बुजुर्गों का सम्मान करें, उनकी सेवा करें और उन्हें यह महसूस कराएँ कि वे हमारे जीवन का महत्वपूर्ण हिस्सा हैं। यही हमारी संस्कृति की पहचान है और यही वह मूल्य हैं, जो समाज को मजबूत बनाते हैं।

जैन गजट को शीघ्र आवश्यकता है

1895 से प्रकाशित हो रहे जैन समाज के सर्वाधिक प्रसार संख्या वाले जैन गजट साप्ताहिक के सदस्य बनाने, विज्ञापन बुक करने एवं जैन समाज के धार्मिक एवं सामाजिक आयोजनों के समाचार भेजने हेतु देश भर में जगह जगह संवाददाताओं की शीघ्र आवश्यकता है। आकर्षक कमीशन एवं अन्य लाभ योग्यतानुसार। आवेदन जैन गजट के वाट्सऐप नं. 7505102419 या 9415108233 पर भेजिये। आवेदन प्राप्त होने पर आपसे संपर्क किया जावेगा।

संपर्क - जैन गजट, ऐश बाग, लखनऊ, मो. 9415008344, 7607921391, 7505102419, Email- jaingazette2@gmail.com, www.jaingazette.com

विहार में साथ चलने के 6 मुख्य फल

1. तीर्थ-वंदना तुल्य पुण्य: दिगम्बर मान्यता है कि मुनि चलते-फिरते तीर्थ हैं। उनके चरण जहाँ पड़ते हैं वह भूमि पवित्र हो जाती है। उनके साथ 1 कदम चलना भी एक उपवास के बराबर फल देता है।

2. अशुभ कर्मों की निर्जरा: मुनि पंच महाव्रत धारी होते हैं। उनके साथ चलते समय आपके मन में अहिंसा, सत्य, अचौर्य के भाव रहते हैं, जिससे अशुभ आसव रुकता है और पुराने कर्मों की निर्जरा होती है।

3. सम्यग्दर्शन की दृढ़ता: रत्नकरण्ड श्रावकाचार में कहा है कि साधु के दर्शन, वंदना, चर्चा से सम्यक्त्व पुष्ट होता है। विहार में घंटों साथ रहने से उनकी चर्या, मौन, संयम देखकर श्रद्धा बढ़ती है।

4. साता-वेदनीय कर्म का बंध: श्रावक जब मुनि की वैयावृत्ति करता है - रास्ता साफ करना, आहार के लिए योग्य क्षेत्र देखना, सुरक्षा देना तो साता वेदनीय और उच्च गोत्र कर्म बंधता है।

5. भव-भ्रमण में कमी: कहा जाता है मुनि संगति से जीव का संसार परिभ्रमण घटता है। क्योंकि विहार में धर्म-श्रवण होता है, वैराग्य बढ़ता है।

6. पुण्यानुबंधी पुण्य: सिर्फ इस भव में नहीं, अगले भवों में भी धर्म सामाग्री, उत्तम कुल, आर्य क्षेत्र मिलना सुलभ होता है। मुनि संगति मोक्ष मार्ग की सच्ची संपत्ति है। मुनि के साथ चलना, अपने जीवन को धर्ममय और भविष्य को कल्याणमय बनाना है।

एक निवेदन- जैन समाज से मेरी विनम्र प्रार्थना है कि निर्ग्रन्थों संतों के साथ विहार में चलने का थोड़ा समय निकालें और ज्यादा से ज्यादा संतों के साथ विहार में चलें। विहार में आजकल बहुत हादसे हो रहे हैं उनसे भी सन्तों को बचाया जा सकता है व साथ में जो निम्न 6 मुख्य फल हैं व मुझे आप लोगों को बताने की आवश्यकता नहीं है, उनका भी फल विहार में चलने वालों को होगा।

- सुधान्शु कासलीवाल
अध्यक्ष- श्री महावीरजी

आचार्यश्री वर्धमानसागर जी का समाधिमरण, साधना की शिखर-यात्रा

समाधिमरण - श्रमण परम्परा की अमर साधना

सम्पादकीय

भारतीय अध्यात्म की महान परम्परा में कुछ घटनाएँ केवल इतिहास का विषय नहीं बनतीं, वे युगों तक संस्कृति की चेतना को आलोकित करती रहती हैं। वे बताती हैं कि तप, त्याग, संयम और आत्मविजय का मार्ग आज भी उतना ही जीवंत है, जितना सहस्रों वर्ष पूर्व था। परम पूज्य क्षपकराज आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज (दक्षिण) का समाधिमरण ऐसी ही एक दिव्य आध्यात्मिक घटना है, जिसने समस्त जैन समाज ही नहीं, बल्कि संपूर्ण भारतीय अध्यात्म-जगत को आत्मानुशासन और वैराग्य की अप्रतिम प्रेरणा प्रदान की है।

आचार्यश्री वर्धमान सागर जी महाराज (दक्षिण) का जन्म 03 जनवरी 1951 को निमशिरगांव, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में श्री अडगोंडा पाटिल और श्रीमती मुरुदेवी पाटिल के यहाँ हुआ। मुनि दीक्षा 02 फरवरी 2004, इचलकरंजी, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुई। दीक्षा गुरु आचार्यश्री सन्मति सागरजी महाराज (दक्षिण) थे। आचार्य पदारोहण 18 फरवरी 2011, कोथली, कोल्हापुर (महाराष्ट्र) में हुआ। दिनांक 5 जुलाई 2026 की रात्रि 11:34 बजे, दिगम्बर जैन सिद्धक्षेत्र कुंथलगिरि (महाराष्ट्र) में निर्यापक आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज के पावन सान्निध्य में पवित्र णमोकार महामंत्र का श्रवण करते हुए तेरह दिवसीय यम-सल्लेखना पूर्ण कर समाधिमरण प्राप्त करना किसी सामान्य साधु का जीवनांत नहीं, बल्कि आत्मा की विजय-यात्रा का सर्वोच्च क्षण है। यह मृत्यु नहीं, अपितु समता, साधना और आत्मजागरण की चरम परिणति है।

आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का समूचा जीवन इस सत्य का प्रमाण रहा कि धर्म का वास्तविक वैभव वाणी में नहीं, बल्कि चरित्र में प्रतिष्ठित होता है।

उनकी मुनिचर्या आगमिक मर्यादाओं के प्रति अटूट निष्ठा की जीवंत अभिव्यक्ति थी। सरलता उनके स्वभाव का आभूषण थी, विनय उनका परिचय था और करुणा उनकी सहज प्रवृत्ति। उनके व्यक्तित्व में कठोर तपस्या और कोमल संवेदना का अद्भुत संतुलन दिखाई देता था। उनके दर्शन मात्र से साधकों को शांति का अनुभव होता था और उनके सान्निध्य में धर्म केवल उपदेश नहीं, बल्कि साक्षात् जीवन-दर्शन बन जाता था।

उनकी साधना का सबसे उज्ज्वल पक्ष गुरु-भक्ति और त्याग की वह परम्परा है, जो श्रमण संस्कृति की आत्मा रही है। उन्होंने अपने आचार्य पद का दायित्व अपने सुयोग्य गुरु-भाई आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज को समर्पित कर यह सिद्ध कर दिया कि श्रमण परम्परा में पद प्रतिष्ठा का नहीं, उत्तरदायित्व का विषय है। जहाँ संसार अधिकारों की रक्षा में संघर्ष करता है, वहाँ संत परम्परा अधिकारों का त्याग कर आदर्श स्थापित करती है। यह त्याग ही श्रमण संस्कृति को अन्य सभी परम्पराओं से विशिष्ट बनाता है।

कुंथलगिरि की पावन भूमि इस दृष्टि से भी अत्यन्त गौरवशाली है कि इसी तपोभूमि पर चारित्रचक्रवर्ती आचार्य श्री शांतिसागर जी महाराज ने छत्तीस दिन की यम-सल्लेखना के उपरान्त 18 सितम्बर 1955 को समाधिमरण प्राप्त कर इतिहास रचा था। आज उसी पवित्र धरती पर आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज का समाधिमरण मानो उसी गौरवशाली परम्परा की पुनः सशक्त उद्घोषणा बन गया है। यह केवल एक संयोग नहीं, बल्कि श्रमण संस्कृति की अखण्ड साधना-धारा का सजीव प्रवाह है।

जैन इतिहास में गुरु और शिष्य के बीच त्याग, श्रद्धा और सेवा के जो दिव्य उदाहरण अंकित हैं, उनमें महाकवि आचार्य ज्ञानसागर जी महाराज और उनके शिष्य आचार्य विद्यासागर जी महाराज का प्रसंग अत्यन्त प्रेरणादायी माना जाता है। गुरु ने अपने शिष्य को आचार्य पद देकर स्वयं विनम्रता पूर्वक उन्हें नमोस्तु किया और शिष्य ने गुरु की अंतिम क्षण तक अनन्य सेवा कर गुरु-भक्ति का अनुपम आदर्श स्थापित किया। यही दिव्य परम्परा वर्तमान में पुनः दृष्टिगोचर हुई, जब आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने अपने उत्तराधिकारी को आचार्य पद प्रदान कर स्वयं सल्लेखना का व्रत धारण किया और उनके उत्तराधिकारी ने भी सम्पूर्ण समर्पण के साथ गुरु की वैयावृत्ति का अनुपम उदाहरण प्रस्तुत किया। यह दृश्य केवल एक धार्मिक अनुष्ठान नहीं, बल्कि भारतीय गुरु-शिष्य परम्परा की सर्वोच्च सांस्कृतिक अभिव्यक्ति है।

सल्लेखना को सामान्य दृष्टि से मृत्यु का वरण समझ लेना उसकी आध्यात्मिक गरिमा का अवमूल्यन होगा। जैन दर्शन में संल्लेखना जीवन से पलायन नहीं, बल्कि राग-द्वेष, मोह और कषायों का क्रमिक क्षय करते हुए समत्वपूर्वक शरीर का परित्याग है। यह आत्मशुद्धि की चरम साधना है, जिसमें साधक मृत्यु का नहीं, अपने कर्मबंधन का अतिक्रमण करता है। इसी कारण आगमों में इसे अत्यन्त पवित्र आराधना कहा गया है। आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महाराज ने तेरह दिनों तक जिस धैर्य, समता और अडिग तप के साथ इस साधना को पूर्ण किया, वह आने वाली पीढ़ियों के लिए प्रेरणा का अमूल्य स्रोत रहेगा। उनका जीवन यह भी सिखाता है कि आध्यात्मिक ऊँचाइयाँ बाह्य चमत्कारों से नहीं, बल्कि आत्मानुशासन, मर्यादा और निरन्तर साधना से प्राप्त होती हैं। उन्होंने अपने जीवन के प्रत्येक क्षण को धर्म के लिए समर्पित किया। विद्वत्ता उनके भीतर थी, किन्तु उससे अधिक विनम्रता थी। नेतृत्व उनके पास था, किन्तु उससे कहीं अधिक सेवा-भाव था। यही कारण है कि वे केवल एक आचार्य नहीं, बल्कि साधुता की जीवित प्रतिमा बनकर समाज के हृदय में प्रतिष्ठित हुए।

आज जब समाज भौतिक उपलब्धियों को सफलता का मानदण्ड मानने लगा है, तब आचार्य श्री वर्धमानसागर जी महाराज (दक्षिण) का समाधिमरण यह स्मरण कराता है कि मनुष्य की सबसे बड़ी विजय स्वयं पर विजय है। जिसने अपने मन, वाणी और इन्द्रियों को संयमित कर लिया, वही वास्तविक अर्थों में विजेता है। यही जैन धर्म का संदेश है और यही श्रमण संस्कृति का शाश्वत आदर्श। आचार्यश्री वर्धमानसागर जी महाराज का समाधिमरण इतिहास की एक घटना भर नहीं, बल्कि यह घोषणा है कि तप की परम्परा आज भी जीवित है, त्याग का प्रकाश आज भी प्रज्वलित है और आत्म कल्याण का मार्ग आज भी साधकों के लिए खुला हुआ है। ऐसे दिव्य महापुरुषों का जीवन और उनका समाधिमरण आने वाली पीढ़ियों को यह प्रेरणा देता रहेगा कि जीवन का वास्तविक उद्देश्य बाह्य वैभव नहीं, अपितु आत्मा की निर्मलता और मोक्षमार्ग की साधना है।

उनके श्रीचरणों में विनम्र श्रद्धासुमन अर्पित करते हुए यही मंगल कामना है कि उनकी समता, साधना, वैराग्य और आत्मानुशासन का दिव्य संदेश युगों-युगों तक श्रमण संस्कृति के पथ को आलोकित करता रहे तथा प्रत्येक साधक के अंतःकरण में आत्मोन्नति की ज्योति प्रज्वलित करता रहे। हमें भी ऐसा ही समाधिमरण प्राप्त हो। यही उनके प्रति सच्ची

दिल्ली-एनसीआर क्षेत्र में चातुर्मास

आचार्य संघ – आचार्य श्री आनंद सागरजी 'मौनप्रिय', ध्यान तीर्थ, बसंत कुंज में होगा। आचार्य श्री श्रुत सागरजी, नोएडा सेक्टर-50 में होगा। पट्टाचार्य आचार्य श्री 108 विशुद्धसागरजी महाराज ससंघ, ऋषभ विहार में होगा। आचार्य श्री विमर्श सागरजी तिजारा में होगा। आचार्य श्री सौभाग्य सागरजी मरसलगंज-सुरतसागराचार्य मथुरा में होगा। आचार्य श्री सौभाग्य सागरजी अशोक विहार फेस-2 में होगा। आचार्य श्री प्रज्ञ सागरजी कृष्णा नगर में होगा। आचार्य श्री अतिवीरजी शक्ति नगर में होगा। आचार्य श्री सौरभ सागरजी मेरठ में होगा। आचार्य श्री विनिश्चय सागरजी कवि नगर गाजियाबाद में होगा। (संभावित)

मुनि संघ – मुनि श्री विनम्र सागरजी प्रशान्त विहार, रोहिणी में होगा। मुनि श्री ज्ञात सागरजी जवाहर पार्क, लक्ष्मी नगर में होगा। मुनिश्री अनुसरण सागरजी चौतल भागल में होगा। (संभावित) मुनि श्री प्रतिज्ञानंद जी उत्तम नगर, मिलाप नगर में होगा।

आर्यिका संघ – आर्यिका श्री आर्यमति माताजी नोएडा से. 27 में होगा। आर्यिका श्री अंतसमति माताजी भजनपुरा में होगा।

परम पूज्य, वात्सल्य वारिधि, पट्टाचार्य 108 श्री वर्धमान सागर जी महाराज ससंघ के चरणों में शत् शत् नमन

आचार्य वर्धमान सागर वचन – भाग 1

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थो की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन
ऐसे आचार्य श्री वर्धमान सागरजी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रीपाल सबलावत, सुरेश सबलावत, हुलासचंद सबलावत परिवार रेडिप्रिण्ट जयपुर

सुधान्शु कासलीवाल अध्यक्ष श्री महावीर जी
विवेक काला, (कालाजी ज्वैलर्स) जयपुर
श्रीपाल भागचन्द चूड़ीवाल, श्यामनगर जयपुर
राजेन्द्र कटारिया, अहमदाबाद

धर्मचंद पहाड़िया जयपुर राज. केन्द्रीय कार्याध्यक्ष तीर्थ संरक्षिणी
इन्द्रमणी देवी चूड़ीवाल, निखार, जयपुर
कैलाशचंद पाटनी किशनगढ़ (उरसेवा वाले)
Caption Tours And Travels Co. Kuwait (Mr. Rishabh Pachori, Mr.Mayur Pachori, Parsola)

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

नैनागिरि जैन तीर्थ पर फिर दिया चोरी का अंजाम

समवशरण जिनालय में रखा दानपात्र के ताले तोड़कर नगदी ले गए चोर

रत्नेश जैन रागी, बकस्वाहा

बकस्वाहा। बुन्देलखण्ड के प्रसिद्ध जैन तीर्थक्षेत्र रेशंदीगिरि नैनागिरि एक बार फिर चोरी की वारदात का शिकार हुआ है। बीते 6-7 जुलाई 2026 की दरम्यानी रात अज्ञात बदमाशों ने भगवान महावीर स्वामी सरोवर में स्थित समवशरण जिनालय मंदिर में फिर बदमाशों ने वारदात को अंजाम देते हुए मंदिर की खिड़की काटकर प्रवेश किया और फिर मंदिर जिनालय में रखा दान पात्र/गुप्त भंडार के ताले काटकर दान की नगदी राशि ले भागे। घटना की सूचना पुलिस को दे दी गई है, पुलिस ने अपनी कार्रवाई प्रारंभ कर दी है।

प्राप्त जानकारी के अनुसार समवशरण जिनालय मंदिर जिनालय क्रमांक-02 के दानपात्र से लगभग 25000/- रुपये की नगदी चोरी कर ली गई। घटना की जानकारी मिलते ही तीर्थक्षेत्र के मैनेजर, सहायक मैनेजर, चौकीदार एवं अन्य कर्मचारी तुरंत सक्रिय हो गए और तुरंत ही स्थानीय पुलिस चौकी में सूचना दी। इस गम्भीर वारदात को लेकर सम्पूर्ण जैन समाज के साथ ही बुन्देलखण्ड म. प्र. में आक्रोश बढ़ता जा रहा है, समय रहते अपराधियों का खुलासा नहीं किया गया तो किसी भी तरह के उग्र आन्दोलन के लिए बाध्य होना पड़ेगा। सूचना मिलने पर

डॉग स्क्वायड एवं अन्य जांचों की मदद से जांच की गई। इसके बाद बड़ामलहरा एसडीओपी रोहित अलावा सहित अन्य अधिकारी भी वारदात स्थल पर पहुँच गये।

पूर्व में भी हुई चोरी - उल्लेखनीय है कि पिछले वर्षों - 2012, 2016, 2021, 2022, 2023 और पिछले वर्ष 05 जुलाई 2025 को बहुत बड़ी घटना को अंजाम देकर लाखों रुपए की दान राशि ले गए। 11-12 नवम्बर 2022 में फिर बड़ी घटना को अंजाम दिया जिसमें कई मंदिरों के ताले काटकर दानपात्र से लाखों रुपयों की राशि के अलावा चादी के 21 छत्र 3 बड़ी छरी बदमाश ले भागे। इसके अलावा अन्य वर्षों में भी इस तीर्थक्षेत्र में इसी तरह की घटनाएँ हो चुकी हैं। बार-बार हो रही इन वारदातों से यह प्रतीत होता है कि रेशंदीगिरि नैनागिरि जैन तीर्थ की धार्मिक और सांस्कृतिक विरासत को योजनाबद्ध तरीके से क्षति पहुँचाने का प्रयास किया जा रहा है।

ट्रस्ट कमेटी का बयान - ट्रस्ट कमेटी के मंत्री राजेश जैन रागी (बकस्वाहा) ने तीर्थ क्षेत्र के सभी श्रद्धालुओं और सामाजिक संगठनों से आग्रह किया है कि वे सक्रिय सहयोग करें एवं आवश्यक जानकारी उपलब्ध कराकर प्रशासन तक पहुँचाएं, जिससे अपराधियों को शीघ्र पकड़ा जा सके एवं श्री रागी ने बताया कि इस वारदात के अपराधियों की पुख्ता सूचना देने वाले व्यक्ति को ट्रस्ट कमेटी की ओर से उचित पारितोषिक नगद राशि प्रदान किया जायेगा तथा उसका नाम भी गोपनीय रखा जाएगा। इस मामले में बकस्वाहा थाना प्रभारी जीतेन्द्र बर्मा ने कहा है कि नैनागिरि जैन तीर्थ के तालाब में समोसरण मंदिर के गुम्बदान में से 25000/- रूपये कि चोरी अज्ञात चोरों द्वारा की गई है। मामला जांच में लिया गया है। जल्द से जल्द चोरों को गिरफ्तार करके चोरी का खुलासा किया जायेगा।

राष्ट्रीय खंडेलवाल (सरावगी) दिगंबर जैन महिला संगठन का तीर्थयात्रा संघ रवाना

इंदौर। राष्ट्रीय खंडेलवाल (सरावगी) दिगंबर जैन महिला संगठन के तत्वावधान में लगभग 100 महिलाओं का तीर्थयात्रा संघ महावीर बाग, इंदौर से दो बसों द्वारा विभिन्न पावन जैन तीर्थों के दर्शन हेतु रवाना हुआ। यह यात्रा श्री णमोकार तीर्थ, सापुतारा, जिनशरणम् धर्मपुर श्री रायचंद, धाम, महुआ पार्श्वनाथ, मणीलक्ष्मी पावागढ़ तथा अंदेश्वर पार्श्वनाथ सहित अनेक प्रमुख तीर्थस्थलों के दर्शन करेगी। यात्रा का मार्गदर्शन संस्थापक संदीप पहाड़िया द्वारा किया जा रहा है। यात्रा के शुभारंभ अवसर पर समाज के अनेक गणमान्यजनों ने धर्मध्वजा दिखाकर बसों को मंगलमय यात्रा के लिए रवाना किया। इस अवसर पर सामाजिक संसद के मनोनीत अध्यक्ष श्री विनय बाकलीवाल सहित श्री कैलाश लुहाड़िया, श्री प्रदीप बड़जात्या, श्री मनोज काला, श्री इन्द्र सेठी, श्री देवेंद्र सोगानी, श्री पवन जी जैन, श्री दीपक पाटनी, श्री नितिन बड़जात्या, श्री प्रदीप कासलीवाल, श्री पंकज अजमेरा, श्री हितेश काला, श्री प्रियांशु बज, श्री शिरीष जैन, श्री नरेश काला, श्री नरेंद्र छाबड़ा, छोटू भैया, श्री वैभव कासलीवाल, विराग युवा मंच के अध्यक्ष श्री पंकज जैन पाटनी, श्री आशीष गंगवाल, श्री संजय वेद, श्री मुकेश गोधा, श्री राकेश गोधा, श्री आलोक जैन, श्री पद्म जैन, श्री यश काला, श्री कमल रांवका, श्री संजय सोनी, श्री जितेन्द्र काला, श्री राजेश पाटोदी एवं समाज के अनेक वरिष्ठजन उपस्थित रहे। सभी ने यात्रियों को मंगलमय एवं सफल तीर्थयात्रा के लिए शुभकामनाएं दीं।

इस अवसर पर महू क्षेत्र की लोकप्रिय विधायक श्रीमती ऊषा ठाकुर ने भी अपनी गरिमामयी उपस्थिति दर्ज कराई तथा सभी यात्रियों को सफल, सुरक्षित एवं मंगलमय यात्रा की शुभकामनाएं प्रदान कीं।

इस अवसर पर महिला संगठन की परामर्श दाता ऊषा पाटनी, मार्गदर्शक कल्पना बाकलीवाल, प्रभारी शीतल पहाड़िया, अंतिम गंगवाल ने सभी यात्रियों को शुभकामनाएं दी। यात्रा संघपति श्रीमती प्रभा गंगवाल, महिला संगठन अध्यक्ष श्रीमती ज्योति सेठी, श्रीमती मोनिका अजमेरा, श्रीमती श्वेता काला, श्रीमती दीपाली बज, बबीता लुहाड़िया,

श्रीमती नमिता कासलीवाल एवं श्रीमती दीपिका गंगवाल ने उपस्थित सभी अतिथियों का स्वागत किया। मंगल कामनाओं और धार्मिक उत्साह के वातावरण में तीर्थयात्रा संघ अपने गंतव्य की ओर प्रस्थान किया गया।

वात्सल्य मूर्ति, कवि हृदय राजकीय अतिथि, आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी मुनिराज के चरणों में शत् शत् नमन् आचार्य श्री शशांक सागर जी महाराज श्री 1008 नेमिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, इमली वाला फाटक, जनकपुरी जयपुर में विराजमान हैं

आचार्य शशांक सागर वचन

जिनके चरणों में लगी हुई तीर्थों की पावन रजकण,
बड़े भाग्य से मिल पाता उन चरणों का स्पर्शन
जिनकी हितमित प्रिय वाणी हरती है धरती का क्रंदन,
ऐसे आचार्यश्री शशांक सागर जी के चरणों में हमारा शत् शत् वंदन

आचार्य 108 श्री सुन्दर सागर जी महाराज ससंघ के साथ हैं।

किसी के बदलने का इंतजार मत करो, खुद को बदलो और अपनी दुनिया को खूबसूरत बनाओ

-: नमनकर्ता/पुण्यार्जक :-

श्रेष्ठी विनित चांदवाड़ (सिद्धार्थ नगर, जयपुर)
श्रेष्ठी ऋषभ कुमार सेठी (अध्यक्ष तिलक नगर जयपुर)
श्रीमती राखी गंगवाल, (आदिनाथ नगर, जयपुर)
अनिल कुमार पाण्ड्या (बनेठा वाले)
गजेन्द्र बड़जात्या, (कामा वाले) जयपुर

श्रेष्ठी महेश-राकेश कुमार ठोल्या (मारूजी का चौक, जयपुर)
पवन कुमार बड़जात्या मरवावाले किशनगढ़
अशोक चांदवाड (वसुन्धरा कॉलोनी, जयपुर)
मधु जैन अध्यक्षा-श्री दिग. जैन मंदिर प्रतापनगर सेक्टर-3
कमल चंद छाबड़ा अध्यक्ष 1008 श्री शांतिनाथ दिग. जैन मंदिर मान्यवास, मानसरोवर जयपुर

विज्ञापन प्रेषक: R.K.Advertising मदनगंज किशनगढ़ द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatin777@gmail.com

फागी कस्बे में आचार्यश्री सुंदर सागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्या सुरम्य मति माताजी ससंघ द्वारा महती धर्म प्रभावना

राजाबाबू गोधा, संवाददाता फागी

7 जुलाई। फागी कस्बे में आचार्य सुंदर सागर जी महाराज की सुयोग्य शिष्या सुरम्य मति माताजी ससंघ कस्बे के पार्श्वनाथ चैत्यालय में धर्म की भव्य प्रभावना बढ़ा रही हैं। प्रातः पार्श्वनाथ चैत्यालय में संघ के पावन सानिध्य में प्रातः शांति धारा, कलशाभिषेक करने के बाद विभिन्न आचार्यों के अर्घ्य चढ़ाकर सुख समृद्धि की कामना की गई। कार्यक्रम में राजस्थान जैन सभा शाखा फागी के महामंत्री राजाबाबू गोधा ने शिरकत करते हुए बताया कि आर्यिका सुरम्य मति माताजी ने अपनी मंगलमयी वाणी से भरी धर्म सभा में श्रद्धालुओं को सम्बोधित करते हुए विभिन्न धार्मिक क्रियाओं पर प्रकाश डालते हुए गुरु भक्ति के बारे में जानकारी देते हुए कहा कि गुरु भक्ति का अर्थ है अपने सद्गुरु के प्रति अटूट श्रद्धा, प्रेम और पूर्ण समर्पण से युक्त होना, जब एक साधक का मन गुरु की शिक्षाओं और वचनों में रम जाता है तो वह अहंकार को त्याग कर गुरु के चरणों में लीन हो जाता है, तब उसे आत्मज्ञान और आध्यात्मिक शांति की प्राप्ति होती है, साधु-संतों की संगति या सत्संग से व्यक्ति के विचारों में सकारात्मक बदलाव आता है, उनके संपर्क में रहने से अच्छे संस्कार, ज्ञान और वैराग्य की प्राप्ति होती है, जिससे जीवन के संकट और मानसिक भट्कव दूर होते हैं, अतः संतों की संगति में मन को शांति और सन्मार्ग मिलता है, संतों के विचारों से अज्ञानता का अधिकार मिटता है, संतों के सानिध्य में रहने से बुरी आदतें छूट जाती हैं, भारतीय संस्कृति और संत परंपरा में साधु, गुरु और संतों की निंदा करना महापाप माना गया है, संतों की निंदा करने से मनुष्य अपने ही संचित पुण्य और धर्म को नष्ट कर बैठता है, इसके विपरीत साधुओं की प्रशंसा और उनके गुणों का गुणगान करने से आध्यात्मिक उन्नति होती है और मन शुद्ध होता है, उन्होंने कहा कि गुरु के बिना हम अंतिम लक्ष्य को प्राप्त नहीं कर सकते। गुरु शाश्वत ऊर्जा और सभी प्रेरणा के स्रोत हैं, गुरु का मार्गदर्शन किसी स्वार्थ के लिए नहीं, बल्कि शिष्य के कल्याण और करुणा पर आधारित होता है। इसी तरह वेद, शास्त्र और गुरु की शरण का अर्थ जीवन में सही ज्ञान, सदाचार और मोक्ष का मार्ग खोजने के लिए प्रमाणिक ज्ञान और सच्चे मार्गदर्शक का सहारा लेना, यह भारतीय संस्कृति और जैन धर्म में आध्यात्मिक विकास का मूल आधार है। अतः प्रकृति के नियम के अनुसार मनुष्य जो भी अच्छे, बुरे-कर्म करता है उसका परिणाम उसे ही भुगतना पड़ता है, कर्मों का चक्र इतना तीव्र है कि अवतारों और देवताओं को भी अपने कर्मों का फल भोगना पड़ता है, उन्होंने कहा कि कर्म ही भाग्य का निर्माता है। इसी तरह मनुष्य की कमियों पर प्रकाश डालते हुए कहा कि अपने को देखने से पहले दूसरों के दोषों को देखना गलत है, दूसरों की कमियों को देखने की आदत हमारे और दूसरों के बीच दूरियां पैदा कर सकती है, हम खुद को श्रेष्ठ समझने लगते हैं, असल में हम दूसरों की गलतियों के प्रति है असहिष्णु हो जाते हैं, जिससे हमारे अपने दोषों को देखने का नजरिया भी विकृत हो जाता है, इसी मोक्ष प्राप्ति के लिए तीन मुख्य मार्ग बताएं ज्ञान योग, कर्म योग, भक्ति एवं योग अतः संस्कारिक मोह माया का त्याग कर आत्मज्ञान प्राप्त करना और निष्काम भाव से सत्कर्म करना ही मोक्ष का मार्ग है।

कार्यक्रम में मंदिर समिति के मंत्री कमलेश चौधरी ने बताया कि पार्श्वनाथ चैत्यालय में धर्म गंगा में ज्ञान की प्राप्ति हेतु श्रद्धालुओं की अपार भीड़ रहती है, सभी से अपील की गई है कि ज्यादा से ज्यादा ज्ञान रूपी गंगा का धर्म लाभ प्राप्त करें। कार्यक्रम में मोहनलाल झंडा, कैलाश कलवाड़ा, रामेश्वर कलवाड़ा, मोहनलाल चोधरी, कैलास कासलीवाल, ओमप्रकाश डेठानी, लड्डू नला, पारस मित्तल, अग्रवाल समाज के अध्यक्ष महावीर झंडा, चम्पालाल जैन, सरावगी समाज के अध्यक्ष महावीर अजमेरा, सत्येंद्र झंडा, विनोद कलवाड़ा, फागी पंचायत समिति के पूर्व प्रधान सुकुमार झंडा, भागचंद कासलीवाल, शिखर मोदी, महावीर मोदी, राजेंद्र मोदी, सुरेन्द्र बावडी, विकास नला, टीकम गिन्दोढी , पंडित संतोष बजाज, पंडित केलास कडीला, विनोद मोदी, पार्षद महेश झंडा, मनीष गोधा, उज्जवल झंडा, आशिक जैन, सोनू गंगवाल, पार्षद राजकुमार कागला, त्रिलोक पीपलू, कमलेश झंडा, कमलेश चौधरी तथा राजाबाबू गोधा सहित सभी श्रावक श्राविकाएं मौजूद थे। कार्यक्रम समापन बाद सभी धर्मावलंबी बंधुओं ने आर्यिका श्री से मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया।

प्रदेश में खुशहाली, विश्व शांति व सुख समृद्धि के लिए किया शांतिनाथ पूजा

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

जयपुर, 8 जुलाई। प्रदेश में खुशहाली, सुख, समृद्धि और शांति की कामना करते हुए सांगानेर स्थित श्री दिगंबर जैन अतिशय क्षेत्र मंदिर संघीजी में मण्डल पर श्री 1008 शांति नाथ पूजा विधान किया गया। इस मौके पर समाजसेवी विनोद-दीपिका जैन कोटखावदा के नेतृत्व में संगीतमय पूजा अर्चना की जाकर अष्ट द्रव्य से मण्डल पर इन्द्र इन्द्राणियों द्वारा श्रीफल के साथ अर्घ्य चढ़ाये गये। अ. भा. दि.जैन परिषद के प्रदेश उपाध्यक्ष विनोद जैन 'कोटखावदा' ने बताया कि मंगलाष्टक एवं अभिषेक पाठ के साथ सूर्य नगर तारों की कूंट निवासी विनोद जैन 'कोटखावदा' मनीष बगड़ा, अमित पाटनी, अंकित सोनी, शुभम हल्दैनिया, अनिल ठोलिया, जैनम जैन द्वारा मंत्रोच्चार के साथ जैन धर्म के 16 वें तीर्थंकर भगवान शांतिनाथ के अभिषेक के बाद विश्व, देश एवं प्रदेश में खुशहाली, सुख, शांति और समृद्धि की कामना करते हुए वृहद शांति धारा की गई। मंगल कलश की स्थापना एवं दीप प्रज्वलन मैना देवी कासलीवाल, मुन्ना देवी वैद, विनोद-दीपिका जैन कोटखावदा, मनीष -संतोष बगड़ा, अंकित-दिव्या बाकलीवाल, शुभम-तन्वी जैन ने किया। तत्पश्चात नव देवता तथा भगवान आदिनाथ की भक्ति भाव से पूजा अर्चना की गई। पं. नवीन जैन के निर्देशन में गायिका सृष्टि जैन एन्ड पार्टी द्वारा मधुर स्वर लहरियों के बीच श्री 1008 शांति नाथ मण्डल विधान पूजा करवाई, इस मौके पर सौधर्म इन्द्र विनोद जैन कोटखावदा, अशोक बाकलीवाल, मनीष बगड़ा, अमित पाटनी, अनिल ठोलिया, ज्ञान चन्द सोगानी, नरेन्द्र पाण्डया, अंकित बाकलीवाल, भाग चन्द पाटनी, भाग चन्द पहाड़िया सहित बड़ी संख्या में गणमान्य श्रेष्ठीजन एवं श्रद्धालु गण शामिल हुए। भक्तिमय भजनों पर मैना देवी कासलीवाल, मुन्ना देवी वैद, दीपिका जैन कोटखावदा, प्रेम लता बाकलीवाल, पुष्पा सोनी, सुनीता हल्दैनिया, अंजना बाकलीवाल, संतोष बगड़ा, दिव्या बाकलीवाल, रेखा पाटनी, शर्मिला पहाड़िया, सुमन ठोलिया, तन्वी जैन, देवांश बाकलीवाल सहित इन्द्र-इन्द्राणियों ने 'केसरिया केसरिया आज हमारो रंग केसरिया', 'पंखीडा ओ पंखीडा....., मीठो मीठो बोल थारो काई लागे......सहित कई भजनों पर भक्ति नृत्य किये। पूजा के दौरान चारों वलय में क्रमशः आठ, सोलह, बत्तीस एवं चौसठ अर्घ्य सहित 120 अर्घ्य चढ़ाये गये। शांतिनाथ विधान का पूर्ण अर्घ्य चढ़ाने के बाद समुच्चय महाअर्घ्य के साथ पूजा सम्पन्न हुई। अन्त में 108 दीपों से भगवान शांतिनाथ एवं पंच परमेष्ठी की भक्तिमय महाआरती की गई।

श्री अनिल कुमार पांड्या के 65 वें जन्मोत्सव पर आचार्यश्री प्रज्ञासागर जी ने दिया मंगलमय आशीर्वाद

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

3 जुलाई। जयपुर शहर के प्रताप नगर सेक्टर-8 में शांतिनाथ जिनालय में आचार्य 108 श्री प्रज्ञा सागर जी महामुनिराज ने प्रसिद्ध समाजसेवी देव, शास्त्र, गुरु के परम भक्त श्री अनिल कुमार जी पांड्या बनेठा वालों को उनके 65 वें जन्मोत्सव पर मंगलमय आशीर्वाद दिया। कार्यक्रम में जैन महासभा के प्रतिनिधि राजाबाबू गोधा ने शिरकत करते हुए कि प्रसिद्ध समाजसेवी देव, शास्त्र, गुरु के परम भक्त, श्री अनिल कुमार जी, श्रीमती उषा जैन, नितिन, विपिन जैन पांड्या बनेठा वाले सपरिवार, छोटा गिरनार बापू गांव के महामंत्री पारस बाकलीवाल ने आज शान्ति जिनालय में अनिल कुमार जी पांड्या के 65 वें जन्म दिन पर आचार्य श्री को श्रीफल भेंट करने के जल, दूध, केसर सहित विभिन्न रसों से पाद प्रक्षालन कर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में आचार्य श्री पुष्पदंत सागर जी महाराज का चित्र अनावरण, दीप प्रज्वलन करने के बाद जिनवाणी भेंट कर आशीर्वाद प्राप्त किया, इसी कड़ी में आचार्य श्री प्रज्ञा सागर जी महाराज ने भरी धर्म सभा में श्रद्धालुओं को भोजन के ऊपर प्रकाश डालते हुए कहा कि आचार्य भगवन कुंदकुंद स्वामी महाराज ने बताया था कि मनुष्य को क्रोध रहित परिणाम से भोजन करना चाहिए, मनुष्य को क्रोध, याचना, संकलेश, तनाव में, गुस्से में, रुठे हुए मन से, कलुषित मन से, भोजन नहीं करना चाहिए ऐसे विचारों से किये गये भोजन से परिवार में अशांति एवं तनाव की स्थिति पैदा होती है। मनुष्य को प्रसन्न मन से भोजन करने पर एनर्जी, ओज, आनंद की प्रसन्नता महसूस होती है, प्रसन्न मन से किए गए भोजन करने से अलग ही प्रभाव नजर आता है अतः अन्न का सम्मान करने से, जूठन न छोड़ने से परिवार में खुशहाली आती है। कार्यक्रम में जीतू जैन निमोडिया के द्वारा मंगलाचरण के बाद मंच का संचालन किया।

चंद्रपुरी बड़के बालाजी जिनालय में पंच परमेष्ठी विधान में जनसैलाब उमड़ा

महावीर कुमार सरावगी,संवाददाता नैनवां जिला-बूंदी

जयपुर। 5 जुलाई 2026 को श्री दिगंबर चंद्र प्रभु जिनालय जैन मंदिर चंद्रपुरी बड़के बालाजी के नाम से विख्यात जिनालय जिसका पंचकल्याणक प्रतिष्ठा महोत्सव आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज के परम सानिध्य में हुआ था, राजधानी जयपुर से बाहर 17 किलोमीटर दूरी पर अजमेर हाईवे पर बहुत ही अद्भुत जिनालय में प्रतिष्ठाचार्य दीपक जैन सांगानेर द्वारा चंद्रप्रभु भगवान का अभिषेक शांतिधारा कराकर दोपहर 12:30 पर विधान का शुभारंभ हुआ।

विधिविधान पूर्वक 11 श्रीफल चढ़ाकर परिवारजनों द्वारा अर्घ्य समर्पित किये, इस विधान के पुण्यार्जक परिवार सृष्टि श्रीमती उर्मिला जैन पुत्र हरीश जैन, श्रीमती ऋतु जैन, प्रार्थ जैन कासलीवाल परिवार ने यह परम सौभाग्य प्राप्त किया।

बाहर दूर-दूर से परिवारजनों में मुंबई शहर से राजकुमार श्रीमती भूमि जैन, सूरत से नीरज जैन सरावगी, जयपुर से श्रीमती प्रेमलाल लता जैन सरावगी, नितिन जैन, श्रीमती चारू जैन, अर्हम जैन वेद परिवार, श्रीमती लाडबाई, श्रीमती सुमन जैन, अशोक, नीतू छाबड़ा, विनोद ममता जैन छाबड़ा, नैनवां जिला बूंदी के जैन गजट संवाददाता महावीर सरावगी गुणमाला, प्रवीण कुमार प्रेमलता जैन सरावगी समेत अनेक दूर-दूर गांव से भक्तों ने पहुंचकर विधान का पूरा-पूरा लाभ प्राप्त किया। 1008 चंद्रप्रभु भगवान की अद्भुत प्रतिमा के सामने विधान में महिलाओं द्वारा बीच-बीच में बहुत ही सुंदर भजनों पर नृत्य की प्रस्तुतियां दीं जो मन भावक थीं, संगीतमय यंत्रों से विधान हुआ। प्रतिष्ठाचार्य द्वारा जैन गजट संवाददाता महावीर सरावगी को आमंत्रित किया, उन्होंने बताया कि संसार की क्रिया तो मनुष्य प्रतिदिन करता है जिससे पापों का बंद होता है। धर्म विधान की क्रिया तो अवसर पुण्य मिलने पर ही कर पाता है। यह धर्म की क्रिया पुण्य प्राप्त होने पर ही कर पाता है यह एक लाभ का सौदा होना बताया।

आचार्यश्री सुनील सागरजी ससंघ का बनेडियाजी में भव्य स्वागत

शेखरचंद पाटनी, राष्ट्रीय संवाददाता

बनेडियाजी। आचार्य श्री 108 सुनिल सागरजी महाराज ससंघ 40 पिच्छी सहित धार से इंदौर की ओर मंगल विहार करते हुए बुधवार प्रातः लगभग 8:30 बजे पहली बार श्री दिगम्बर जैन अतिशय क्षेत्र बनेडियाजी पहुंचे। देपालपुर से बनेडिया मार्ग पर बैंडबाजों एवं जयघोष के साथ उनका भव्य स्वागत किया गया। महाराज श्री के आगमन से सम्पूर्ण क्षेत्र भक्तिमय वातावरण में सराबोर हो गया तथा समाजजन श्रद्धा और उत्साह के साथ मंगल विहार में सम्मिलित हुए। मंदिर के मुख्य द्वार पर ट्रस्ट अध्यक्ष अनिल गंगवाल, नरेश गंगवाल एवं चेतन बोहरा सहित समाजजनों ने पाद प्रक्षालन एवं शास्त्र भेंट कर आचार्यश्री की अगवानी की। इसके पश्चात मंदिर में विराजमान भगवान अजितनाथ के समक्ष आचार्यश्री के सान्निध्य में शांतिधारा एवं अभिषेक संपन्न हुए। इस अवसर पर अनेक श्रद्धालुओं ने शांति धारा एवं अभिषेक की बोलियां लगाकर धर्म लाभ प्राप्त किया। तत्पश्चात मंदिर परिसर स्थित पार्श्वनाथ पंडाल में धर्मसभा का आयोजन हुआ, जिसमें आचार्यश्री ने गुरु भक्ति, कृतज्ञता, संयम एवं आत्मकल्याण के महत्व पर प्रकाश डाला। उन्होंने कहा कि गुरु के सान्निध्य में आने वाला प्रत्येक व्यक्ति धन्य हो जाता है तथा गुरु भक्ति से जीवन की अनेक समस्याओं का समाधान संभव है। उन्होंने कहाकि अपने कर्मों का लेखा-जोखा प्रत्येक व्यक्ति के अपने हाथ में होता है, इसलिए प्रत्येक कार्य सोच-समझकर करना चाहिए। आचार्यश्री ने कहा कि लोग दीक्षा और चारित्र को कठिन मानते हैं, जबकि वास्तव में सबसे दुर्लभ गुण कृतज्ञता है। उन्होंने आचार्य भद्रबाहु एवं चंद्रगुप्त मुनिराज का उदाहरण देते हुए बताया कि गुरु के प्रति समर्पण और सेवा ही व्यक्ति को इतिहास में अमर बनाती है। उन्होंने कहा कि साधु का कर्तव्य निरंतर पुरुषार्थ करना है तथा जो व्यक्ति दृढ़ता के साथ चारित्र का पालन करता है, उसके सहयोगी स्वयं देव भी बन जाते हैं।

उन्होंने संलेखना के विषय में कहाकि यह केवल जीवन के अंतिम समय की प्रक्रिया नहीं, बल्कि कषायों, राग-द्वेष और विकारों को कम करने की साधना है, जिसका आरंभ जीवन में बहुत पहले से हो जाता है। मनुष्य को सदैव श्रेष्ठ एवं सकारात्मक विचारों को अपनाना चाहिए क्योंकि विचार ही भावनाओं का स्वरूप हैं। आचार्यश्री ने कहा कि सम्यक दर्शन, सम्यक ज्ञान और सम्यक चारित्र ही मोक्षमार्ग के आधार हैं। उन्होंने श्रद्धालुओं को संबोधित करते हुए कहा कि सम्मेद शिखरजी का प्रत्येक कण वंदनीय और पूजनीय है, क्योंकि यह मोक्षभूमि है जहां अनेक तीर्थंकरों एवं महान आत्माओं ने निर्वाण प्राप्त किया है। धर्मसभा में आचार्यश्री ने कहा कि केवल मंदिर या धर्मसभा में उपस्थित होना पर्याप्त नहीं है, बल्कि मन को भी एकाग्र और धर्ममय बनाना आवश्यक है। उन्होंने कहा कि मन को जीतने वाला ही परमात्मा बनता है, जबकि मन का दास बनने वाला जीव संसार में भटकता रहता है। ज्ञान को आत्म कल्याण का सच्चा प्रकाश बताते हुए उन्होंने सादा जीवन और उच्च विचार अपनाने की प्रेरणा दी।

उन्होंने समाजजनों से अपने घर को भी तीर्थ बनाने तथा पूज्यजनों की आराधना में तन, मन और जीवन समर्पित करने का आह्वान किया। उन्होंने कहा कि केवल दर्शन ही नहीं, बल्कि उनसे प्रेरणा ग्रहण करना भी आवश्यक है। मनुष्य जैसा भाव बनाता है, वैसा ही पुण्य उसे प्राप्त होता है। इस अवसर पर ट्रस्ट अध्यक्ष अनिल-रानीजी गंगवाल, नरेशजी गंगवाल, देवेन्द्र सेठी, सुरेन्द्र मोदी, वीरेन्द्र बड़जात्या, चेतन गंगवाल, भागचंद छाबड़ा, इन्द्रकुमार सेठी, कैलाश वेद, नीरज मोदी, योगेन्द्र काला, पारस पांड्या, पं. नितिन झांझरी, पवन जैन, राकेश जैन विहर्ष, प्रकाश सेठी, मुकेश गोधा, पवन पाटोदी, अखिलेश जैन, संजय कासलीवाल, डॉ. संगीता विनायका सहित महिला मंडल एवं बड़ी संख्या में समाजजन उपस्थित थे।

वर्तमान में आचार्यश्री इंदौर में विराजमान हैं जहां उनका भव्य चातुर्मास होगा।

जयपुर व आसपास में जैन आचार्यो, मुनिराजों एवं आर्यिका माताजी के सम्भावित चातुर्मास

विनोद जैन कोटखावदा

1. परम पूज्य आचार्यश्री 108 प्रज्ञा सागर जी महाराज ससंघ - चातुर्मास स्थल - गोलोक धाम, निमोड़िया मोड़, जयपुर कोटा हाईवे, चाकसू
2. परम पूज्य आचार्य श्री 108 विशद सागर जी महाराज ससंघ - चातुर्मास स्थल-श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर, चित्रकूट कालोनी, सांगानेर जयपुर
3. परम पूज्य आचार्य श्री 108 आदित्य सागर जी महाराज ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री दिगम्बर जैन मंदिर जनकपुरी, ज्योति नगर जयपुर
4. परम पूज्य आचार्य श्री 108 शशांक सागर जी महाराज ससंघ - चातुर्मास स्थल -श्री दिगम्बर जैन साधु सेवा तीर्थ, पदमपुरा - बाड़ा
5. परम पूज्य आचार्य श्री 108 नवीन नंदी जी महाराज - चातुर्मास स्थल - श्री ऋषभ देव दिगम्बर जैन मंदिर अजमेर रोड, दहमी कला, बगरू
6. परम पूज्य मुनि श्री 108 विश्व विजय सागर जी महाराज - चातुर्मास स्थल - चिंतामणि पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, पारस विहार, मुहाना मण्डी, जयपुर
7. परम पूज्य मुनि श्री 108 सुमन्त्र सागर जी महाराज - चातुर्मास स्थल - श्री पार्श्वनाथ दिगम्बर जैन मंदिर उगरियावास, जयपुर
8. परम पूज्य गणिनी आर्यिका प्रमुख 105 श्री जिन देवी माताजी ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर सेठी कालोनी, जयपुर
9. परम पूज्या गणिनी आर्यिका श्री 105 नंगमति माताजी ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री सुधर्म नंग अहिंसा ट्रस्ट, विमल परिसर, टोंक रोड, नांगल्या, बीलवा, जयपुर
10. परम पूज्या गणिनी आर्यिका श्री 105 विभा श्री माताजी ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री दिगम्बर जैन मंदिर वरुण पथ, मानसरोवर, जयपुर
11. परम पूज्या आर्यिका अर्ह श्री माताजी ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री 1008 आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर मंगल विहार, गोपाल पुरा बाई पास, जयपुर
12. परम पूज्या आर्यिका श्री 105 विष्णु प्रभा माताजी ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री दिगम्बर जैन मंदिर कमला नेहरू नगर, अजमेर रोड, जयपुर
13. परम पूज्या आर्यिका श्री 105 सुकाव्य मति माताजी ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री महावीर दिगम्बर जैन मंदिर मुरलीपुरा, सीकर रोड, जयपुर
14. परम पूज्या आर्यिका श्री 105 सुविज्ञ मति माताजी ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर, विवेक विहार, न्यू सांगानेर रोड, जयपुर

जयपुर के आसपास के चातुर्मास -

1. परम पूज्य आचार्य श्री 108 सुंदर सागर जी महाराज ससंघ - चातुर्मास स्थल -श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन अग्रवाल मंदिर, निवाई
2. परम पूज्य उपाध्याय श्री 108 ऊर्जयंत सागर जी महाराज - चातुर्मास स्थल - दौसा
3. परम पूज्या गणिनी आर्यिका श्री 105 विज्ञाश्री माताजी ससंघ - चातुर्मास स्थल - श्री विज्ञातीर्थ, गुन्शी (निवाई)
4. परम पूज्या आर्यिका श्री 105 नंदीश्वरमति माताजी - चातुर्मास स्थल - चौमूं।

अजमेर सोनीनगर जैन मन्दिर में आचार्यश्री विहर्ष सागरजी ससंघ को अल्प प्रवास हेतु श्रीफल किया भेंट

राजाबाबू गोधा, संवाददाता

9 जुलाई। अजमेर श्री आदिनाथ दिगम्बर जैन मन्दिर सोनीनगर अजमेर के पदाधिकारीगण एंव सदस्यगणों ने सामूहिक रूप से जयकारों के साथ पार्श्वनाथ कालोनी स्थित जैन मन्दिरजी में विराजमान आचार्य 108 विहर्ष सागरजी महाराज ससंघ को अजमेर अल्प प्रवास के दौरान सोनीनगर जैन मन्दिर में आने के लिये अध्यक्ष डॉ. राजकुमार गोधा के निर्देशन में श्रीफल समर्पित कर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया। कार्यक्रम में समाज के प्रवक्ता संजय कुमार जैन ने जानकारी दी कि आचार्यश्री ने अपने मुखारविंद से अपनी स्वीकृति 11 जुलाई को प्रातः 7.00 बजे सोनीनगर जैन मन्दिर आने की स्वीकृति प्रदान की जिससे पूरे सोनीनगर जैन समाज में हर्ष की लहर है। आचार्यश्री से विनती करने वालों में डॉ. राजकुमार गोधा, शान्तिलाल पाटनी, रमेश पाटनी, मनोज अजमेरा, प्रकाश गोधा, संजय कुमार जैन, प्रकाश पल्लीवाल, श्री दिगंबर जैन महासमिति के संभाग महामंत्री कमल गंगवाल, दीपक दोषी, उत्तम जैन, सरिता अजमेरा, अंकुश गदिया, निर्मल गंगवाल पंकज गंगवाल, देवर्ष गंगवाल, दक्षत जैन आदि गणमान्य लोग उपस्थित थे।

अहमदाबाद में चातुर्मास

पुनीत जैन

अम्बिकानगर (ओढव): उपाध्याय श्री 108 सुदत्तसागरजी महाराज, मुनि 108 श्री प्रणुत सागर जी महाराज, क्षुल्लक श्री 105 विनियोगसागरजी, क्षुल्लक श्री 105 सुप्रसन्न सागरजी।

पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर शोला: मुनि 108 श्री अपूर्वसागर जी महाराज, मुनि 108 श्री अर्पितसागर जी महाराज, मुनि 108 श्री विवर्जितसागर जी महाराज।

श्री पारसनाथ दिगम्बर जैन मंदिर हाटकेश्वर: आचार्य 108 श्री निर्भयसागर जी महाराज, आर्यिका 105 विराग मति माताजी।

श्री 1008 पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर जैन मिलन: आर्यिका 105 श्री देवयशमति माताजी, आर्यिका 105 श्री देवागममति माताजी।

श्री शांतिनाथ दिगम्बर जैन मंदिर उस्मानपुरा: आर्यिका 105 विदुषी श्री माताजी, आर्यिका 105 विरत श्री माताजी, आर्यिका 105 विनीत श्री माताजी, आर्यिका 105 विकम्पा श्री माताजी, आर्यिका 105 विनोद श्री माताजी।

ऋषभदेव दिगम्बर जैन मंदिर ब्रह्मानंद सोसाइटी मेघाणीनगर: आर्यिका 105 श्री सुप्रकाशमति माताजी, आर्यिका 105 श्री भावना मति माताजी, आर्यिका 105 श्री सुगीतमति माताजी, आर्यिका 105 श्री सुवेग मति माताजी।

धनलक्ष्मी सोसाइटी: (संभावित) आर्यिका 105 श्री पवित्र मति माताजी, आर्यिका 105 श्री गरिमा मति माताजी, आर्यिका 105 श्री करनमति माताजी।

1008 महावीर जैन मंदिर सेक्टर-21, गांधीनगर: मुनि 108 श्री सद्भाव सागर जी महाराज, छुल्लक श्री 105 परमयोग सागर जी अहमदाबाद गुजरात में इस बार बहुत चातुर्मास है।

श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गुरु उपकार दिवस

लखनऊ। इंदिरा नगर स्थित जैन मंदिर में आर्यिका 105 वियोजना श्रीमाताजी का 16वां दीक्षा दिवस मंगलवार को गुरु उपकार दिवस के रूप में श्रद्धा और उत्साह के साथ मनाया गया। कार्यक्रम की शुरुआत आर्यिका माताओं की ओर से आचार्यश्री के चरण प्रक्षालन से हुई। इसके बाद वियोजना श्रीमाताजी का चरण प्रक्षालन कर शास्त्र भेंट किए गए। जैन समाज के महामंत्री अभिषेक जैन ने बताया कि 21 जुलाई से अष्टानिका पर्व पर आठ दिवसीय सिद्धचक्र महामंडल विधान तथा 29 जुलाई से गुरु पूर्णिमा के अवसर पर आचार्यश्री सुबल सागर जी महाराज का चार माह का चातुर्मास प्रवास लखनऊ में होगा।

सूरत में चातुर्मास

मुनि श्री महिमा सागर जी, मुनि श्री परम सागर जी, गणिनी आर्यिका श्री कीर्तिश्री माताजी, पूज्य क्षुल्लिका श्री सम्मेदश्री माताजी का चातुर्मास स्थान - श्री विघ्नहर पार्श्वनाथ दिगंबर जैन मंदिर अतिशय क्षेत्र महुआ, पोस्ट महुआ, जिला सूरत (गुजरात), पिन कोड नं 394250, मो. 8849964135, क्षेत्र आफिस सागर जी शाह मैनेजर, संघस्थ दीदी 7841887108, 9685043398 (9825490408, 9638481041 अनीश भाई शाह)

'बिंदी' पुस्तक का पूजन

एम. सी. जैन, चिकलठाणा

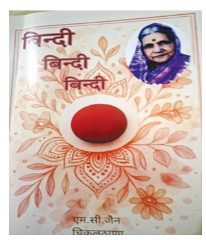

प्रख्यात समाजसेविका, चिकलठाणा ग्रामीण संभाग में ग्रामीण महिलाओं में अत्यंत आदरणीय महिला सौ. हेमलता जी एम पाटणी चिकलठाणा का मुंबई में ऑपरेशन के दरम्यान अचानक देह परिवर्तन हुआ और समस्त परिवार पर दुखदः पहाड़ गिर पड़ा। भारतवर्ष के प्रख्यात विद्वान पं. तनसुख काला की भतीजी, पंडित माणिकचंद जी काला मुंबई की कन्या एवं पत्रकार लेखक एम. सी. जैन की धर्मपत्नी थी। ''बिंदी'' पुस्तक सारगर्भित कृति है, बिंदी पुस्तक का परिवार के ओर से पूजन किया गया। 24 जुलाई, 2026 को प्रथम पुण्य तिथि पर वितरण होगा।

चतुर्थ पुण्य तिथि

हमारी पूज्यनीया

श्रीमती कमला देवी जी गंगवाल

(धर्मपत्नी स्व. श्री पूनम चंद जी गंगवाल, झरिया वाले)

निधन दिनांक 18 जुलाई 2022

आपकी छवि विस्मृत हो ना पायेगी, आपका व्यवहार आपकी बातें सदैव याद आयेंगी,
अर्पित है आपको अश्रुभरी भावांजलि, देते हैं, चरणों में आपको हार्दिक श्रद्धांजलि।।

-: शोकाकुल :-

धर्मचन्द, कैलाश चन्द (देवर), मनोज, विनोद, नरेश, प्रदीप, हेमन्त, पंकज (भतीजे) हंसराज-चन्दा, गजराज-हेमलता, दिलीप-बेला, प्रदीप-कविता, ललित-रितिका (पुत्र-पुत्रवधु), अंजना, मंजू-प्रवीण (पुत्री-दामाद), विकास-रूचि, आकाश-शीतल, आभास-अदिति, अमित-दीपिका, पीयूष-रचना, रोबिन-नैना, अभिषेक, दर्श, नमन (पौत्र-पौत्रवधु), विनीता-आनंद, सुनीता-संजय, शैफाली-आकाश, नेहा-ध्रुव, अदिति-जिनेन्द्र, रिया (पौत्री-पौत्री दामाद), वत्सल, प्रासुक, दीपम, अभियान, आरव, सुहान (प्रपौत्र), काशवी, वैनवी, सुकृति, इनारा, बयाना (प्रपौत्री), पदमावती (ननद), पंकज-सपना, दीपक-मनीषा, अभिषेक-अर्चना (दोहिता-दोहितावधु), जूली-दीपक, खुशबू-आशीष, मल्का-विपिन (दोहिती-दोहिती दामाद), दिलीप-अनीता, मनोज-पायल, सुनील-लीना (भांजा-भांजावधु)

पीहर पक्षः नरेन्द्र कुमार-रन्जू पहाड़िया (कुचामन सिटी)

प्रतिष्ठान

चंद्रप्रभु इंटरनेशनल लि. - दिल्ली, गुड़गांव, गांधीधाम, बनारस, रांची
साउथ वेस्ट पिनाकल एक्सप्लोरेशन लि. - गुड़गांव

समस्या समाधान - रवि जैन गुरूजी

प्रश्न 1. व्यापार में लगातार नुकसान हो रहा है - सम्यक जैन, गुलाल वाटिका लोनी

उत्तर - श्री भक्ताभर जी के 28वें काव्य की 1 माला रोजाना व्यापार के स्थान पर फेरें, अनुकूल परिणाम आयेंगे।

प्रश्न 2. मेरे पिताजी का स्वास्थ्य ठीक नहीं है, उपाय बतायें - अनमोल जैन, झांसी।

उत्तर - श्री भक्तामर जी के 45वें काव्य की 1 माला पानी रखकर पढ़ें और पानी पिताजी को पीने के लिये दें, साथ ही मूंगा रत्न गले में धारण करायें।

प्रश्न 3. हर बात पर पत्नी से विरोधाभास रहता है - सचिन जैन, रायपुर छत्तीसगढ़।

उत्तर - मून स्टोन रत्न चांदी में मढ़वाकर सीधे हाथ की सबसे छोटी ऊंगली में सोमवार को धारण करें।

प्रश्न 4. नौकरी में प्रमोशन नहीं हो रहा है - राहुल जैन, प्रीति विहार, दिल्ली

उत्तर - आपकी कुडंली में राहु में शनि की अन्तर्दशा चल रही है। शनि की दशा जल्द समाप्त हो जायेगी, उसके बाद प्रमोशन निश्चित है।

गुरुजी से संपर्क सूत्र-
9990402062
8826755078

चातुर्मास का मानव जीवन में महत्व

- डॉ. नरेन्द्र जैन भारती, सनावद

वर्तमान युग की जो आध्यात्मिक शक्तियां हैं, चाहे वह किसी भी धर्म के मानने वालों की हों, वह दिगंबर जैन मुनियों को अत्यंत श्रद्धा और आस्था से देखती हैं। इसका कारण उनके वैराग्यमयी जीवन में त्याग की उत्कृष्ट भावना है जो व्यक्ति संसार, शरीर और भोगों से विरक्त हो जाते हैं, वे त्याग मार्ग अपनाते हैं।

जैन धर्म त्याग प्रधान धर्म है। दिगंबर जैन मुनि तिल, तुष मात्र भी परिग्रह नहीं रखते। जो परिग्रह रखते हैं, उन्हें व्यक्ति साधु जीवन का सम्मान तो देता है परंतु उनके त्यागमय जीवन की प्रशंसा में संकोच करता है। इसका अर्थ है कि वह व्यक्ति यह मानता है कि दिगंबर मुनिराजों का जीवन ही त्याग की दृष्टि से सर्वश्रेष्ठ है उनके पास मात्र तीन उपकरण होते हैं। पीछी, कमण्डलु और शास्त्र। इन तीनों के अलावा कोई भी वस्तु उनके लिए अनुपयोगी है। इसलिए वस्त्र त्याग कर वे तपस्या में रत रहते हैं। ज्ञान, ध्यान और तप में लीन हो जाना उनका स्वभाव बन जाता है। लोक में यह प्रसिद्ध है कि सर्व परिग्रह का त्याग करने वाले साधु ही आत्मज्ञान में लीन रह सकते हैं। संत शिरोमणि आचार्य श्री विद्यासागर जी महाराज का यदि भारत वर्ष ही नहीं, विदेशों में बसे समस्त समाज के लोग भी सम्मान करते और श्रद्धा रखते थे तो इसका कारण जिनागम के प्रति अटूट आस्था तथा जिनधर्म के प्रति समर्पण भाव था वे कुगुरु, कुदेव, कुधर्म में विश्वास न रख कर सच्चे देव शास्त्र और गुरुओं में विश्वास रखते थे। उनका विश्वास था कि आत्मा के कल्याण के लिए रत्नत्रय अर्थात् सम्यग्दर्शन, सम्यग्ज्ञान और सम्यग्चारित्र के मार्ग पर चलकर ही हम मोक्ष प्राप्त कर सकते हैं। संपूर्ण बंधनों से मुक्त हो सकते हैं, इसलिए वह पंचमकाल की परवाह न करते हुए सच्चे त्याग मार्ग पर चलते थे चर्या से भी वे सच्चे देव, शास्त्र और गुरुओं के प्रति समर्पित रहे और व्यक्ति उनके आशीर्वाद को जीवन की सबसे बड़ी सफलता बताते रहे। आज भी कई साधु ऐसे है जो अनेक लोगों को त्याग मार्ग पर लगाकर जिनधर्म के अनुरूप बना रहे हैं। साधुगण जैन धर्म में वर्णित चातुर्मास के अनुरूप कार्य करें। जीवों की विराधना और हिंसा से बचें, यह सभी के लिए उचित है। इस वर्ष 28 जुलाई से चातुर्मास प्रारंभ हो रहे हैं। पैदल विहार कर आठ माह तक धर्म प्रभावना करने वाले साधुगण एक स्थान पर रहकर चातुर्मास करेंगे। चातुर्मास में व्यक्ति का आचरण धर्मानुरूप बने, अधर्मी, धर्म मार्ग में लगें, त्याग के महत्व को समझें, उनका जीवन सदकार्यों के लिए समर्पित रहे, सच्चे देव, शास्त्र और गुरुओं की व्याख्या पंथवाद में न फँसे, श्रावक द्रव्य पूजा के अंतर्गत अष्ट द्रव्य से पूजा करें तथा साधु भाव पूजा ही करें, इसी का प्रचार धर्म सम्मत है। एक व्यक्ति दूसरे व्यक्ति की प्रतिष्ठा को धूमिल करने के लिए चातुर्मास में बनाये गये मंचों का उपयोग न करें ऐसी भावना सभी की होनी चाहिए। साधुगण चातुर्मास के धर्मोपदेश में प्रथमानुयोग के दृष्टांतों का उल्लेख कर धर्म की शुरुआत करते हुए करणानुयोग, चरणानुयोग और द्रव्यानुयोग का उपयोग कर धर्मोपदेश दें, ऐसे प्रयास होने चाहिए। व्यर्थ का प्रदर्शन न हो इसका ध्यान रखा जाना चाहिए। आज की स्थिति में देखें तो कई साधुओं की अगवानी में विशाल जुलूस निकालकर बाहरी संसाधनों के प्रदर्शन से उनके प्रभाव को प्रदर्शित किया जाता है। कई व्यक्ति ऐसे साधु चाहते हैं जिनसे दान के माध्यम से लाखों की आमदनी हो और मंदिरों और धर्मशालाओं का निर्माण हो। दूसरी तरफ यह स्थिति है कि अनेक साधु साध्वियों को चातुर्मास करने में भी दिक्कत आती है। कई साधु तेरा-बीस पंथ की भावना से ग्रसित होकर विवादास्पद क्रिया - कलापों को प्राथमिकता देते हैं। अतः इस बात का ध्यान रखना चाहिए कि किसी भी धर्मोपदेश से सामाजिक जीवन की एकता प्रभावित न हो तथा व्यक्ति जिन पूजा और दान के महत्व को समझकर कार्य करें, स्वाध्याय में रुचि बने, ऐसे प्रयास करना चाहिए ताकि चातुर्मास व्यक्ति के आत्महित का साधन बने।

सोनकच्छ में रचा गया इतिहास

एक ओर तप, त्याग और साधना के शिखर पुरुष अंतर्मना आचार्य श्री 108 प्रसन्न सागर जी महाराज तो दूसरी ओर सनातन परंपरा के अंतर्राष्ट्रीय शिव कथा वाचक पूज्य पंडित प्रदीप जी मिश्रा। दो महान आध्यात्मिक विभूतियों का यह दिव्य मिलन सोनकच्छ की धरा पर साकार हुआ। पंडित प्रदीप जी मिश्रा ने अंतर्मना गुरुदेव के श्रीचरणों में वंदन कर मंगलमय आशीर्वाद प्राप्त किया। यह केवल एक भेंट नहीं, बल्कि आध्यात्मिक समरसता, संत परंपरा और भारतीय संस्कृति का अविस्मरणीय संगम था।

जैन गजट की सदस्यता, विज्ञापन या सहयोग राशि 'जैन गजट' के पक्ष में पंजाब नेशनल बैंक, राजेन्द्र नगर शाखा, लखनऊ- 226004 उ.प्र. में सेविंग खाता संख्या 2405000100102500 (RTGS/NEFT IFSC CODE - PUNB 0185600) में आनलाइन/चैक द्वारा जमा कराकर डिपोजिट स्लिप सहित अपने पूर्ण नाम-पते, पिन कोड सहित निम्न पते/वाट्सअप/ईमेल पर भेजकर सूचित करने की कृपा करें-

जैन गजट कार्यालय- श्री नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग, लखनऊ- 226004
मोबा./वाट्सअप- 7607921391, मोबा. 7505102419
Email: jaingazette2@gmail.com

स्वत्वाधिकारी 'श्री भारतवर्षीय दिगबर जैन महासभा' के लिये प्रकाशक एवं मुद्रक सुभाषचन्द्र गुप्ता द्वारा द इण्डियन एसप्रेस प्रा. लि. सी 26, अमौसी इण्डस्ट्रीयल एरिया लखनऊ उर प्रदेश से मुद्रित एवं श्री नंदीश्वर लोर मिल्स कपाउण्ड, मिल रोड, ऐशबाग लखनऊ-226004 उ. प्र. से प्रकाशित, सपादक -सुधेश कुमार जैन

श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा

अध्यक्ष
गजराज जैन गंगवाल
मो. 09810900009

कार्याध्यक्ष
रमेश जैन तिजारिया
मोबाइल - 08290950000
प्रकाशचन्द्र जैन बड़जात्या
मोबाइल- 9840213132
राजेश बी. शाह
मोबाइल- 9076700000

महामंत्री
पवन जैन गोधा
मो. 9311198985

कोषाध्यक्ष
प्रकाश बोहरा
दिल्ली

सम्पादक
सुधेश कुमार जैन, लखनऊ
मो. 09415108233
नन्दीश्वर फ्लोर मिल्स कम्पाउण्ड,
ऐशबाग, लखनऊ- 226004 (उ0प्र0)
jaingazette2@gmail.com
dmahasabha@yahoo.com

सह सम्पादक (मानद)
राजेन्द्र जैन 'महावीर' सनावद
मो. 9407492577
डॉ. सुनील 'संचय' ललितपुर
मो. 9793821108

लखनऊ प्रधान कार्यालय प्रबंधक प्रकाशक एवं मुद्रक
सुभाषचन्द्र गुप्ता
मोबा. 09415008344

दिल्ली मुख्य कार्यालय प्रबंधक
स्वराज जैन
मोबा. 09899614433
श्री भारतवर्षीय दिगम्बर जैन महासभा,
5, राजा बाजार, खण्डेलवाल जैन मंदिर
कॉम्प्लेक्स, कनॉट प्लेस, नई दिल्ली -1
011-23344668, 23344669,
digjainmahasabha@gmail.com
www.digjainmahasabha.org

जैन गजट की सदस्यता
वार्षिक (एक वर्ष) रू. 300
आजीवन (दस वर्ष) रू. 2100
निर्धारित रियायती साधारण डाक से कोरियर से मंगाने पर प्रतिवर्ष अतिरिक्त शुल्क- दिल्ली, उ.प्र. रू. 1000 अन्य प्रदेश रू. 1500

'जैन गजट' में विज्ञापन
देने हेतु सम्पर्क-
7607921391, 7505102419
जैन गजट में प्रकाशनार्थ लेख, फोटो, समाचार, विज्ञापन आप ईमेल jaingazette2@gmail.com पर भेजें

वात्सल्य वारिधि 108 आचार्य श्री वर्धमान सागर जी महामुनि राज का 37वां आचार्य पदारोहण दिवस आषाढ़ शुक्ला दूज दिनांक 16 जुलाई 2026 प्राणी मात्र के लिए सुखदाय हो।

राजस्थान राज्य के प्रसिद्ध शहर सीकर स्थित श्री दिगम्बर जैन मंदिर धोद में

14 से 16 जुलाई 2026 को मनाया जाएगा

प.पू. वात्सल्य वारिधि आचार्य श्री 108 वर्धमानसागर जी महाराज का

37 वां आचार्य पदारोहण महोत्सव

आप भी अपने परिवार एवं इष्ट–मित्रों के साथ इस स्वर्णिम अवसर पर पधारकर पूज्य गुरुदेव के प्रति अपनी अटूट निष्ठा को व्यक्त करें

निवेदक- सकल दिगम्बर जैन समाज धोद एवं चंद्रप्रभु दिगम्बर जैन मंदिर कमेटी

हम आचार्य वर्धमान सागर जी महाराज के आचार्य पदारोहण दिवस पर उनके स्वास्थ्य व दीर्घायु जीवन की कामना करते है और भगवान से प्रार्थना करते है आचार्य श्री के द्वारा जो जिन धर्म व जिन शासन की प्रभावना हो रही है वह उत्तरोत्तर वृद्धि को प्राप्त हो।

पुण्यार्जक नमनकर्ता

SKP GROUP

श्रीमान सुरेश कुमार जी–श्रीमती सरिता जी, श्रीमान रोहित जी–श्रीमती नेहा जी, श्रीमान अंकित जी–श्रीमती नैना जी अयांश जी, आन्या जी, अर्हम् जी, राजवीर जी एवं समस्त पाटनी परिवार, निवासी– धोद प्रवासी, कोलकाता

फर्म– SKP GROUP OF COMPANIES

जिनवाणी JINVANI

CHANNEL NO. TATA PLAY 1066 | CHANNEL NO. d2h 1219 | CHANNEL NO. airtel digital TV 676 | CHANNEL NO. dishtv 1105 | CHANNEL NO. SUN 617 | Download Our App Jinvani Channel | GET IT ON Google Play | Download on the App Store

विज्ञापन प्रेषक: R.K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच ऑफिस- जयपुर, इंदौर, सूरत, मुम्बई, कोलकाता, गुवाहाटी

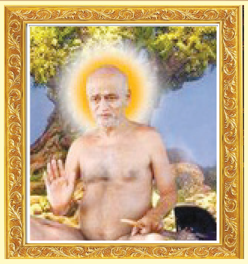

आचार्य 108 श्री विद्यासागर जी महाराज के द्वितीय समाधि स्मृति दिवस पर उनके प्रवचनों का सार

जब तीर्थंकर भगवान् का जन्म होता है, तब धूल-धूसरित रास्ता उज्ज्वल बनता जाता है और उनके अभाव में वापस धूल से भर जाता है। प्राय: संसारी व्यक्ति को रास्ता बताने की जरूरत पड़ती है। जिस प्रकार आकाश में अनेकों पक्षी चलते हैं पर उनके पद-चिह्न नहीं पड़ते हैं, उसी प्रकार मोक्ष रास्ते में अनेकों व्यक्ति चलते हैं, पर चिह्न नहीं पड़ते हैं। नमस्कार हमको किस लक्ष्य को लेकर करना है ? यह हमें देखना है। अनेक व्यक्ति रात दिन भगवान् का नाम लेते हैं, उपासना करते हैं। तन, मन, धन व वचन से नाम लेते हैं पर इससे ऊपर भी एक चीज है, वह है लक्ष्य की ओर ध्यान देना, निदान की ओर ध्यान देना। जब तक रोग का निदान नहीं होगा, तब तक रोगी का रोग दूर नहीं होगा, उसी प्रकार हमें भी लक्ष्य को पहले देखना होगा। हमें यह देखना होगा कि जिस वस्तु (लक्ष्य) को हम चाह रहे हैं, उसको प्राप्त करने का रास्ता भिन्न तो नहीं है, हमारी गति दूसरी दिशा की ओर तो नहीं है।

प्रेरणा

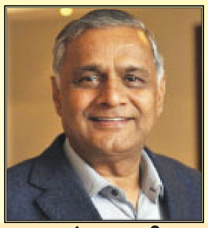

अशोक पाटनी
आर. के. मार्बल्स किशनगढ़

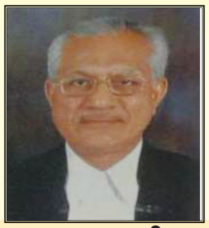

सुधान्शु कासलीवाल
जयपुर

जहां उपस्थित होते हैं वहां सब आपको प्यार करते हैं,
जहां से चले जाते हैं, सब आपको याद करते हैं।
जहां पहुंचने वाले होते हैं वहां सब आपका इन्तजार करते हैं।
शेखरचन्द पाटनी

पुण्यार्जक/नमनकर्ता

तरूण काला
मुम्बई

पवन पाटनी
(आशिका ग्रुप, मुम्बई)

राजेन्द्र प्रसाद जैन–श्रीमती ममता जैन
(प्रशांत जैन के माता–पिता) मुम्बई

पंकज जैन
मुम्बई

हजारी मल पाण्ड्या
कोलकाता

अमरचंद पहाड़िया (सिद्धा ग्रुप)
(कोलकाता, जयपुर, मुम्बई)

नन्द किशोर पहाड़िया
बनीपार्क जयपुर (ARLGroup)

विज्ञापन प्रेषक: R. K. Advertising मदनगंज किशनगढ़, द्वारा-शेखरचन्द पाटनी, जैन गजट राष्ट्रीय संवाददाता, मो. 09667168267 rkpatni777@gmail.com

हेड ऑफिस-मदनगंज किशनगढ़, ब्रांच आफिस- जयपुर, इंदौर, सूरत, मुम्बई, कोलकाता, गुवाहाटी

पंजीकृत समाचार पत्र
R.N.I. NO. 59665/92

Posted at R. M. S, Char bagh, Lko. on
Every Monday, wednesday and thursday

डाक पंजीयन संख्या :
SSP/LW/NP/115/2024-2026

If Undelivered Please Return To : Publisher- Jain Gazette
C/o Sri Nandishwar Flour Mills Compound, Mill Road, Aish bagh,
Lucknow - 226004 (U. P.) (INDIA) Mob. 9415108233,
7505102419, 7607921391 Web site- jaingaztte.com
email- jaingazette2@gmail.com whatsapp 7607921391

To,
....
....
....

एक प्रति का मूल्य 3/- रुपये (कार्यालय से लेने पर)

वार्षिक सदस्यता शुल्क 300/-,
दस वर्षीय आजीवन शुल्क 2100/-
(डाक/कोरियर से मंगाने पर खर्च अतिरिक्त देय होगा)

जैन गजट संबंधी सभी विवादों के लिए न्याय क्षेत्र लखनऊ ही मान्य होगा। लेखक के विचारों से संस्था या सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं है।